चन्दामामा
अप्रैल १९९५
Rs 5

Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

SUPER
RUBBER
It's time to go back to school again. Time for text
books. Time for games. Time to meet old friends.
And make new ones. Time to start studying
again. Because there's so much to learn about
the world around you.
From all of us here at Chandamama, have a
great year in school. And remember to tell us
what you've learnt everyday, when you
come home from school !
THE
HANDAMAMA
OLLECTION
ARTIG1246

# चन्दामामा

अप्रैल १९९५

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

## सच्चा ज्ञान

अब तक कुछ बच्चों ने अपनी वार्षिक परीक्षाएं लिख दी होंगी, तो कुछ और बच्चे अपनी वार्षिक परीक्षाओं के लिए आवश्यक तैयारियों में तल्लीन होंगे। यह परीक्षा उनके लिए बहुत ही मुख्य परीक्षा है, क्योंकि इस परीक्षा में पारित होने पर ही वे अगली कक्षा में प्रवेश पा सकते हैं।

मूल प्रश्न तो यह है कि क्या ये परीक्षाएं ही वर्ष भर में प्राप्त उनके ज्ञान का मापदंड है? क्या इन्हीं से यह निर्धारित हो पाता है कि उन्होंनें साल भर में क्या सीखा और क्या नहीं? उनके ज्ञान की दिशा सही है अथवा नहीं ? केंद्र-सरकार द्वारा नियुक्त एक अधिकृत निकाय ने इस संबंध में हाल ही में एक सर्वेक्षण किया। निम्न तथा उच्च कक्षाओं के लिए वे एक ही मापदंड को उपयोग में ले आये, जिनसे उन्हें मालूम हुआ कि जैसे-जैसे बच्चे उच्च कक्षाओं में प्रवेश करते जाते हैं, वैसे-वैसे उनकी ज्ञान - प्राप्ति कम होती जाती है; उनकेनिर्णयों में भी ढिलाई आ जाती है। इस सर्वेक्षण में मूलत: उनके ज्ञान की अभिवृद्धि को ही दृष्टि में रखा गया, नाकि उन्हें परीक्षाओं में कितने अंक मिले। हो सकता है उन्हें सौ फीसदी अंक भी मिले हों।

यह सर्वेक्षण हुआ १९८९ में। बीस राज्यों के ६०,००० विद्यार्थियों से पूछ-ताछ की गयी। इसे पूरा करने में तीन साल लगे। और दो साल लगेंगे, इससे प्राप्त जानकारी के विश्लेषण में।

एक प्रकार से इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि विद्यार्थी अपनी परीक्षाओं को अत्यधिक प्रधानता देते हैं। अंतिम परीक्षाओं के लिए उन्हें जितने ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है, उतना ही ज्ञान वे प्राप्त करते है, उससे अधिक नहीं। वे पाठ्यपुस्तकों तथा कक्षाओं में जितना ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसीसे वे तृप्त रह जाते है। इससे अधिक ज्ञान प्राप्त करने की वे आकांक्षा नहीं रखते। इस सर्वेक्षण से यह भी मालूम हुआ कि राज्यों की राजधानियों में शिक्षित छात्र देहातों के छात्रों से अधिक पढ़ते तथा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

ज्ञान-प्राप्ति के विषय में लड़की और लड़कियों में पर्याप्त अंतर पाया गया। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि बहुत-से राज्यों में विद्यार्थिनियां विद्यार्थियों से बहुत आगे हैं। सर्वेक्षकों ने अपने निर्णयों में बताया कि अध्यापकों पर इसकी जिम्मेदारी है और वे ही बच्चों की शिक्षा-प्राप्ति के सही मार्गदर्शी हैं।

वर्ष : ४८ | अप्रैल १९९५ | अंक : ८

एक प्रति : रु. ५/- | वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

"मेरि"
दुनिया भर की नारियों को, 31 से अधिक सालों से मनमोहक, खूबसूरत और मज़बूत स्वर्णपट्टित ज़ेवरों से सँवार रहे हैं।
मेरि अब पेश करते हैं चकाचौंध करने वाले रंगबिरंगे और उत्तम डिज़ाइन के ज़ेवर, जो शुद्ध चाँदी पर सोने का पानी चढ़ा कर और अमरीकी हीरे (A.D) से जड़ा कर बनाये गये हैं।
ज़ेवर वी.पी.पी. द्वारा मँगाये जा सकते हैं। हमें ज़ेवर की संख्या का उल्लेख देते हुये लिखिये। मंदिर की मूर्तियों और भरत नाट्यम के लिए ज़ेवर बनाना हमारी विशेषता है। मुफ्त रंगीन सूचापत्र के लिये लिखिये। कृपया पत्रव्यवहार हिन्दी या अंगरेज़ी में ही करिये।
No:193 Rs. 300/50
No:154 Rs. 300/50
No:152 Rs. 200/50
No:43 Rs. 150/50
No:294 Rs. 250/50
No:257 Rs. 350/50
No:232 Rs. 300/50
No:8 Rs. 200/50
No:123 Rs. 200/50
No:214 Rs. 300/50
No:37 Rs. 200/50
No:952 Rs. 500/50
No:86 Rs. 400/50
A. D.
No:266 Rs. 600/50
A. D.
No:834 Rs. 450/50
A. D.
No:862 Rs. 700/50
A. D.
No:876 Rs. 400/50
No:49 Rs. 400/50
No:90 Rs. 600/50
A. D.
No:830
Rs. 1250/50
A. D.
No:918 Rs. 300/50
MERI GOLD COVERING WORKS
P.O. Box 1405, 18, Ranganathan Street, T. Nagar,
Madras 600 017, Phone: 444671, 442513
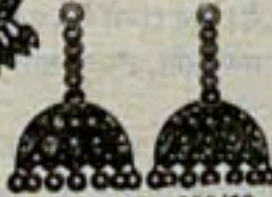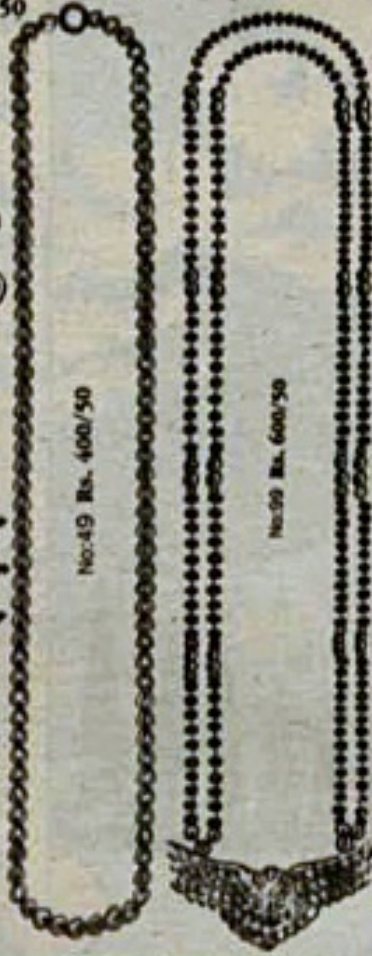
समाचार - विशेषताएँ

# स्वीडन में 'सोशल डेमाक्रट्स'

माता - पिता जब दोनों नौकरी पर जाते हों, तब शिशु अस्वस्थ हो जाए तो उसकी देखभाल कौन करे ? इस प्रश्न का उत्तर दो - तीन प्रकार से दिये जा सकते है। किन्तु स्वीडन सरकार ने इस समस्या का जो समाधान ढूँढा, वह उत्तम समाधान कहा जा सकता है। इस समाधान के अनुसार जब माँ - बाप नौकरी कर रहे हों और शिशु अस्वस्थ हो तो उसकी देखभाल का भार पिता को सौंपा गया है। इस अवधि में उसके वेतन में कटौती नहीं होगी, उसे दफ़्तर में उपस्थित माना जायेगा और यथावत् उसका वेतन उसे दिया जायेगा। यह संभव इसलिए हो पाया कि वहाँ की सरकार कल्याणकारी सरकार है। बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक हर दशा में जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति में संलग्न है यहाँ की सरकार। इसलिए यहाँ बेकार लोगों को किसी ना किसी पेशे में लगाया जाता है।

आश्चर्य होता होगा कि यह कैसे संभव हो पा रहा है। १९३२ से, बीच में छह सालों को छोड़कर, सोशल डेमाक्राटिक पार्टी' शासन-भार संभाल रही है। अर्थात करीबन साठ सालों से यह पार्टी सत्तारूढ़ है। यह पार्टी जब जम गयी और सुस्थिर हो गयी, तब इसने अनेकों सुधारों को प्रवेश किया। नये-नये उद्योगों की स्थापना के लिए निजी संस्थाओं को याने गैर सरकारी संस्थाओं को अनुमति दी। इससे लोगों को बड़ी संख्या में नौकरियाँ मिलीं। समाज के सब स्तरों के लोगों को सुविधाएँ प्राप्त हों, इसके लिए उसने करों में बढ़ौती की। उद्योगों के कर्मचारियों को ट्रेड यूनियन स्थापति करने प्रोत्साहन दिया। इससे सब क्षेत्रों में सर्वतो-मुखी विकास हुआ। देश सुसंपन्न हुआ। प्रजा सुखमय जीवन बिताने लगी।

किन्तु विपक्ष, 'कन्सरवेटिव लिबरल पार्टी' का आरोप है कि सत्तारूढ़ वामपक्ष कल्याणकारी योजनाओं के लिए धन का दुरुपयोग कर रहा है। १९८६ में प्रधान मंत्री ओलाफ़ पाल्मे की हत्या की गयी। इंग्वर कार्लसन 'सोशल डेमाक्रटिक पार्टी' के नेता चुने गये। १९९१ में संपन्न आम चुनावों में यह दल हार गया। कार्ल बिल्ट 'कन्सरवेटिव लिबरल पार्टी के नेता चुने गये। उनके शासन-काल में सरकारी कल्याणकारी बहुत-सी योजनाएँ रद्द की गयी। उद्योगों में भी सरकारी उद्योगों को प्रधानता दी गयी। इससे बेकारी की समस्या बढ़ी। जनता सरकार के इस रुख से असंतुष्ट हुई। उन्होंने निर्णय किया कि पुनः 'सोशल डेमाक्रटिक पार्टी'' को ही सत्ता सौंपी जाए। १९९४ में जो आम चुनाव हुए, उसमें 'सोशल डेमोक्रटिक पार्टी' विजयी हुआ। कार्लसन फिर से प्रधान मंत्री चुने गये।

स्वीडन राजा केवल नाममात्र के लिए राजा हैं। शासकीय कार्यकलापों में हस्तक्षेप नहीं करते।

# कौशिक का व्यापार

कौशिक का पिता राजा के दरबार का कर्मचारी था। वहाँ काम करते हुए बहुत-सा धन कमाया। वह चाहता था कि बेटा भी दरबार में काम करे, किन्तु उसने व्यापार को ही अपना धंधा चुना। पिता ने उसे समझाते हुए कहा "कौशिक, मेरी बात ध्यान से सुनो। व्यापार विरासत है। हमारे पुरखों में से किसी ने भी व्यापार नहीं किया था। वह हमारे लिए लाभदायक नहीं होगा। मेरी बात मान और दरबार में काम करो।" थोड़ी ही दूरी पर खड़ी कौशिक की माँ ने अपने पति की बातें सुनीं और एकदम नाराज़ होती हुई बोली "इसके मामा पहले थोड़े ही व्यापारी थे। लेकिन अब बड़े व्यापारियों में से एक हैं। उसने कितना कमाया, यह किसी से छिपा नहीं है। तुम तो हमेशा अपने ही लोगों की बात सोचते हो, मेरे अपनों की बात ही नहीं करते हो! यह कैसे कह सकते हो कि मेरा बेटा व्यापार करेगा तो कमायेगा नहीं। मेरा भाई अवश्य ही मेरे बेटे का मार्गदर्शन करेगा। व्यापार की सूक्ष्मताएँ सिखायेगा।" "तुम अपने भाई लोकेश्वर की बात कर रही हो ना? वह तो अपने बेटे को ही व्यापार की सूक्ष्मताएँ नहीं सिखाता तो तुम्हारे बेटे को क्या सिखायेगा? व्यापार में किसी का शिष्यत्व व मार्गदर्शन पाना बहुत ही ज़रूरी है। अथवा वह व्यापार के लिए नालायक़ सिद्ध होगा।" कौशिक के पिता ने अपनी पत्नी को समझाया।

कौशिक की माँ ने अपने बेटे के कंधों पर हाथ डालते हुए मानों उसे धीरज दे रही हो, अपने पति से कहा "तुम तो कोल्हू के बैल की तरह हो। बस तुम तो यही चाहते हो ना कि तुम्हारा बेटा भी राज-दरबार में ही काम करे। मेरा भाई तुम्हारी तरह स्वार्थी नहीं। उसने गहनों की दुकान अपने बेटे को सौंप दी और खुद किराने की दुकान संभाल रहा है। वह अपनी बेटी सुशीला की शादी इससे करना चाहता है। बस, हमारे पूछने की देरी है,

कुमार भल्ला

कौशिक को व्यापार की बारीकियाँ फट् से सिखलायेगा।" उसकी बातों में कडुवापन था और था आत्म-विश्वास भी।

माता-पिता के इस आपसी झगड़े को देखकर कौशिक झल्ला उठा और बोला "तुम दोनों अपनी-अपनी बातों पर अड़े हुए हो। मेरे बारे में सोचते क्यों नहीं ? मैं भी अक़्लमंद हूँ। मुझे दूसरों की सलाह नहीं चाहिये। मुझे विश्वास है कि व्यापार में मैं स्वयं दक्ष बनने की क्षमता रखता हूँ।"

"तो करो, जैसा तुम चाहते हो। पर याद रखना। तुम्हें एक फूटी कौड़ी भी नहीं दूँगा।" कौशिक के पिता ने साफ़ कह दिया।

"मेरी अक्ल ही मेरे व्यापार की पूँजी है। मुझे किसी की भी आर्थिक सहायता नहीं चाहिये। एक साल तक मुझे भूल जाइये। फिर अच्छा व्यापारी बनकर लौट आऊँगा।" कौशिक ने अपना निर्णय सुनाया।

उसे रास्ते में एक साधु मिला। कौशिक ने साधु को प्रणाम किया और अपना लक्ष्य सुनाया। उसने साधु से आशीर्वाद माँगा। तब साधु ने उससे थोड़ा-सा धन माँगा। कौशिक ने उससे पूछा "आप तो साधु हैं। आप सांसारिक बंधनों से मुक्त पुरुष हैं। आपको धन की आवश्यकता क्यों है ?"

साधु ने कहा "धन के लिए ही तो मैंने यह वेष धारण किया है। मैं अशिक्षित हूँ। कोई भी काम करने की मुझमें योग्यता नहीं। परंतु हाँ,

मेरे हाथ-पैर सही सलामत हैं। कुछ कमा पाता तो इसी वेष के कारण। अगर वह भी ना रहा तो मुझे भूखा ही रहना पड़ेगा।"

"तो मतलब यह हुआ कि यह वेष-धारण भी व्यापार ही है।" कौशिक ने पूछा।

"केवल नामों में फरक़ है। इस जगत में कोई ऐसा काम नहीं, जो व्यापार नहीं।" एक क्षण रुककर साधु फिर बोला "अब हम दोनों मिलकर एक काम करेंगे।" एक क्षण रुककर साधु फिर बोला "इस व्यापार में तुम्हें भी भागीदार बनाऊँगा और दोनों मिलकर इस व्यापार को और बढ़ायेंगे, पनपायेंगे। जो लाभ होगा, आपस में बाँट लेंगे।"

कौशिक ने अनिच्छापूर्वक ही अपनी स्वीकृति दी। दूसरे ही दिन एक तंबू खड़ा कर

दिया गया, जहाँ लोगों की चहल-पहल थी। साधु परमानंदस्वामी बन गया। पैसे लेता और पापियों के पापों को धो डालने का ढोंग करने लगा। कौशिक ने भी अपना वेष बदल दिया और उसके शिष्य होने का नाटक करने लगा।

तूतिया में पानी होता है, इसलिए उसका रंग नीला होता है। उसे गरम करने पर पानी सूख जाता है। सफ़ेद तूतिया को बाहर छोड़ने पर फिर से वह पानी को ग्रहण कर लेता है और फिर से नीला बन जाता है। इस सूत्र को आधार बनाकर साधु ने अपनी योजना बनायी।

परमानंदस्वामी की दायीं ओर के जलते हुए पानी पर एक थाली में सफ़ेद रंग का चूर्ण है। बायीं ओर जलता हुआ तवा है। कौशिक वहाँ आये हुए व्यक्ति से पैसे लेता और उसके हाथ में सफ़ेद रंग का चूर्ण रखता। उससे कहता कि थोड़ी देर तक आँखें बंद कर लो। थोड़ी ही देर में वह चूर्ण नीले रंग में बदल जाता।

कौशिक तब उस व्यक्ति से कहता कि तुम्हारे शरीर में जो विष है, वह इस चूर्ण में घुल-मिल गया है। आँखें खोल और स्वयं देख।

पापी आँखें खोलता और उस नीले रंग के चूर्ण को देखकर काँप उठता। वह भय से उस चूर्ण को साधु के हाथ में रख देता। साधु आँखें मूँदकर मंत्रोच्चारण करता। उस चूर्ण को वह बायीं ओर के तवे में डाल देता। कुछ क्षणों में वह चूर्ण सफेद रंग में बदल जाता। तब साधु उससे कहता कि तुम्हारे पाप वायु में मिल गये हैं।

भयभीत वह व्यक्ति संतृप्त होकर चला जाता था। चुटकी भर के चूर्ण का दाम है एक अशर्फी।

एक बार जो व्यक्ति अपने पाप धोने के लिए यहाँ आता था वह दूसरी बार वहाँ आये, इसके लिए साधु उससे कहता "मनुष्य का जन्म ही पाप पूरित है। साँस खींचते हुए और उसे छोड़ते हुए अनजाने में हम कितने ही सूक्ष्मजीवों को मारते रहते हैं। हमारा हर काम हमसे पाप कराता रहता है। इसलिए पाप किये बिना हमारा जीना दुश्वार है। पर पाप धोये बिना हम हाथ धरे चुप भी बैठ नहीं सकते। तुम लोगों के पापों को धोने के प्रयत्न में ही यहाँ आया हूँ। हो सकता है, मेरी शक्तियाँ आप लोगों के सारे पापों को धो ना पायें, परंतु अवश्य ही कुछ हद तक दूर कर सकती हैं। आपको शांति पहुँचा सकती हैं।"

इसलिए बार-बार आने के बाद भी उन्हें शंका नहीं होती थी कि वह चूर्ण क्यों नीले रंग में परिवर्तित हो रहा है।

उनमें साधु पर श्रद्धा बढ़ती ही जा रही थी। जो वहाँ आते थे, उनमें से कुछ एक चुटकी भर का चूर्ण लेते थे तो कुछ ज़्यादा। कुछ लोग एक ही बार आते तो कुछ लोग बहुत बार आते थे। यों उस तंबू के पास हर दिन भीड़ होती थी।

यों कुछ दिन गुजर गये। एक दिन कौशिक ने साधु से पूछा "हमने तो बहुत कमा लिया है। अब तो अच्छा यही होगा कि तुम अपना अवतार समाप्त करो।" साधु ने उसकी सलाह का तिरस्कार किया और कहा कि हमें और कमाना होगा।

कौशिक ने साधु से कहा "हद से बढ़कर लालच बुरी होती है। वह हानिकारक भी सिद्ध हो सकती है। संसार में हमसे भी अधिक
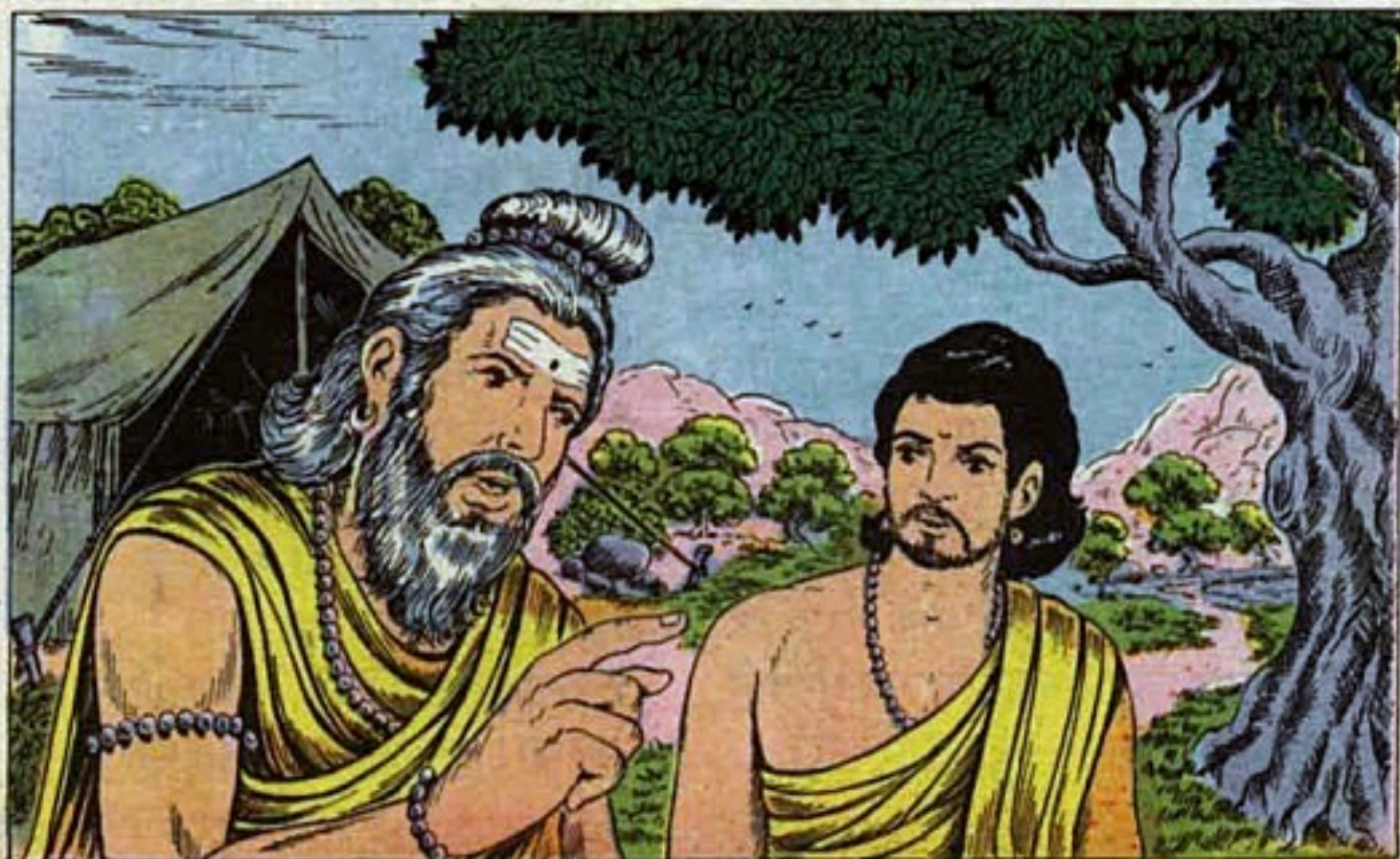
बुद्धिमान हैं। हम जैसे लोग ऐसे चमत्कार करते ही रहेंगे तो उन्हें संदेह होगा। पर हाँ, प्रारंभ में ये बेवकूफ लोग उनकी बातों का विश्वास नहीं करेंगे। किन्तु धीरे-धीरे जब वे सोचने लगेगें कि यह झूठ है या सच, तो वे अक़्लमंद लोग इसका फ़ायदा उठायेंगे और हमारा पोल खोल देंगे। मेरी बात मानो।''

साधु उसकी बातों पर नाराज़ हो उठा और बोला ''तुम्हें भागीदार बनाया, धनी बनाया। अब मैं यह जगह छोड़कर दूसरी जगह पर अपना भाग्य आजमाना चाहता हूँ। और तुम हो, जो ऐसी भद्दी सलाह ऐसे सुनहरे मौक़े पर दे रहे हो।'' यों कहकर उसने कमायी रक़म की गिनती की। कुल रक़म थी एक लाख अशर्फियाँ।

साधु ने उसे पचास हजार अशर्फियाँ देनी चाही, जो उसका हिस्सा था। लेकिन कौशिक ने पूरी रक़म लेने से इनकार किया और कहा ''अपने पाप-भार का आधा भार मेरे सिर चढ़ाना चाहते हो?

''मैं इतना पाप-भार ढो नहीं सकता। मुझे सिर्फ पाँच हजार दो। भार थोड़ा हल्का हो जायेगा।'' कौशिक ने साधु से केवल पाँच हजार अशर्फियाँ लीं और अपने मामा लोकेश्वर के गाँव त्रिनाथपुर गया।

उस समय लोकेश्वर अपनी दुकान में था। कौशिक ने सोचा कि इस वेष में मामा उसे पहचान नहीं पायेगा। इसलिए वह दुकान पर गया और पूछा ''मुझे सूखा खजूर चाहिये। दाम ज़्यादा भी हो तो कोई बात नहीं।''

लोकेश्वर ने उसे नहीं पहचाना। उसने पूछा ''सिर्फ़ खजूर ही चाहिये या और कुछ?''

''हाँ, खरीदना तो बहुत कुछ है। पहले यह बताओ कि खजूर है या नहीं?'' कौशिक ने पूछा।

लोकेश्वर ने फ़ौरन 'अरे रंगा' कहकर किसी को बुलाया। पंद्रह साल का एक लड़का बाहर आया। लोकेश्वर ने उससे पूछा तो उसने बताया कि खज़ूर है। कौशिक को जितने खज़ूर चाहिये, उतने एक पुड़िया में बाँधने के लिए कहा तो वह उन्हें लाने अंदर गया।

तब लोकेश्वर ने 'गोपी' कहकर किसी और को बुलाया। तब यहाँ एक और लड़का आया।

लोकेश्वर ने उससे कहा "इन्हें जो चाहिये तोलो और पुड़ियों में बाँधकर दो।" तब रंगा वापस आया और कहा कि बोरे भर का खजूर होना चाहिये था, पर कहीं दिखायी दे नहीं दे रहा है।

"यह बताने के लिए इतनी देर लगा दी। देखा नहीं, बेचारे कितनी देर से खड़े-खड़े इंतज़ार कर रहे हैं।" लोकेश्वर ने झल्लाते हुए रंगा को डाँटा और कौशिक से कहा "हमारी दुकान में जो चीज़ नही मिलती, वह किसी की दुकान में मिलेगी ही नहीं। इसलिए यह ना समझना कि आपका समय हमने बरबाद किया।"

रंगा पर सहानुभूति दिखाते हुए उसने कौशिक से कहा "क्या करें ? बेचारे रंगा के माँ-बाप नहीं रहे। पेट भरने के लिए उसे नौकरी करनी पड़ रही है। वह भीख भी नहीं माँग सकता, क्योंकि वह आत्माभिमानी है। वह तो कहता रहता है कि मेहनत करूँगा, कमाऊँगा और खाऊँगा। कोई उसे काम भी नहीं देता। आखिर व्यापारी में भी थोड़ा-बहुत दया-गुण होना ही चाहिये। इसीलिए मैंने उसे काम दिया है। ग़लती मेरी है, इसलिए उसके कारण आपको जो असुविधा हुई, उसका कारक मैं हूँ।" लोकेश्वर ने कहा।

कौशिक ने मन ही मन सोचा कि मामा तो व्यवहार-कुशल व्यापारी निकले। उसने मामा से कहा "उस रंगा को क्या मालूम है कि इस शहर में लोकेश्वर नामक एक व्यापारी है। अगर वह जानता हो तो यह सामान उनके घर भिजवा देता। वे मेरे मामा हैं।" लौटकर वहाँ से जाने लगा।
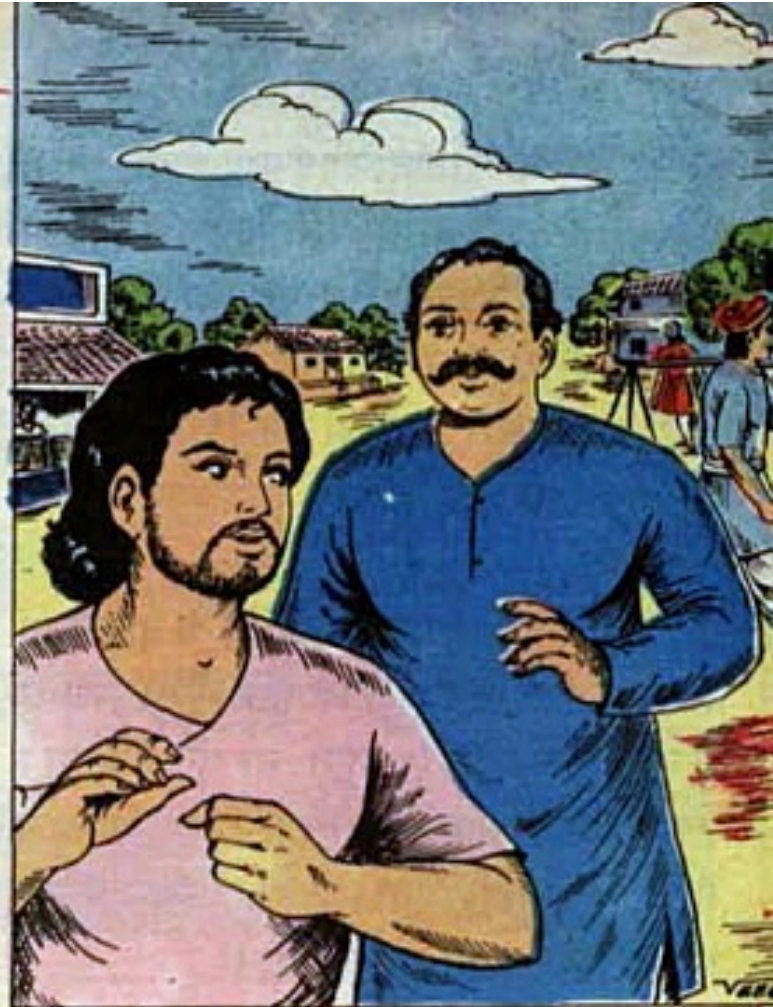
लोकेश्वर चौंक पड़ा और दुकान से बाहर आकर उससे बोला "अरे कौशिक , तुम ? पहचान नहीं सका। चलो घर चलते हैं।"

कौशिक ने आश्चर्य से पूछा "दुकान छोड़कर आ गये ? वह रंगा तो एकदम बुद्धू है।"

लोकेश्वर हँसता हुआ बोला "मैं ऐसी बातें तो दूसरों को सुनाता हूँ। पर रंगा है, बहुत ही तेज़ और चतुर। विश्वासपात्र भी, उसीकी वजह से इस बुढ़ापे में भी दुकान चला रहा हूँ।"

"तो सूखे खजूर के बारे में वह ऐसे क्यों पेश आया ?" कौशिक ने पूछा।

"सूखे खजूरों को खरीदने जो आये हैं, उन्हें खाली हाथ भी लौटाना ठीक नहीं है ना ? तुम्हें तो और चीज़ें भी चाहिये। गोपी जब उन चीजों को पोटलियों में बाँध रहा था, तब वह जल्दी-जल्दी दूसरी दुकानों में खजूर के लिये गया। कहीं नहीं मिला। इसमें जो देरी हुई, उसके लिए उसे गालियाँ खानी पड़ीं।" लोकेश्वर ने बात स्पष्ट की।

कौशिक ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा "तो हर व्यापार धोखा ही है क्या ? मैंने एक साधु से हाथ मिलाया और बहुत-सा धन कमाया। इतना धन कमाना व्यापारी के लिए एक साल में भी संभव नहीं होगा।" फिर उसने अपनी पूरी कहानी मामा को बतायी।

लोकेश्वर इसपर हँस पड़ा और कहा "चीजों में मिलावट ग़लत है। वह तो धोखा है। खरीददारों की असहायता का फ़ायदा उठाकर दामों में वृद्धि करना धोखा है, पाप है। मैं ऐसा व्यापार नहीं करता। हाँ, अपनी चतुरता से ग्राहकों को प्रभावित अवश्य करता हूँ।"

कौशिक ने कहा, "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं अपनी अक़्ल व्यापार में लगाऊँ या धोखे की कमाई में लगाऊँ ? अलावा इसके, मैं घर से डींग हाँककर निकला कि अपनी अक़्लमंदी से कमाउँगा और घर लौटूँगा। अब तो यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं आपकी सलाह लूँ या नहीं ?"

लोकेश्वर ने कौशिक की पीठ थपथपायी और कहा "धोखा देकर कमाने से आत्म-तृप्ति नहीं होती। अपनी बुद्धि का उपयोग व्यापार में करो। मैंने गहनों की दुकान अपने बेटे को सौंप दी और साधारण लोगों की सेवा करने के लिए यह दुकान चला रहा हूँ। अब रही, तुम्हें मेरी सलाह देने की बात। तुमने तो मुझसे कोई सलाह नहीं माँगी। तुम्हारे माँगे बिना ही मैंने तुम्हें सलाह दी। आगे-आगे मैं तुम्हें व्यापार की कई बारीकियाँ बताऊँगा। इससे अवश्य ही तुम अच्छे व्यापारी बन सकते हो।"

कौशिक ने व्यापार किया। वह उसमें कुशल बना। साल भर में खूब कमाया। माता-पिता के पास जाकर उसने सब कुछ बताया। वे अपने बेटे की व्यापार-दक्षता पर बहुत ही प्रसन्न हुए।

(नौ सालों तक ट्रोय नगर को ग्रीक घेरे रहे, परंतु ठोस युद्ध नहीं हो पाया। ग्रीक के अग्रवीरो में से एक वज्रकाय ने ट्रोय नगर की राजकुमारी प्रमोदिनी को देखकर उसे चाहा। उसे बताया गया कि ग्रीक का साथ ना देने पर ही प्रमोदिनी उसे उपलब्ध हो सकती है। वज्रकाय ने अर्थहीन कारण को बहाना बनाकर राजा से झगड़ा मोल लिया और रणरंग से हट गया। इस अवसर का फ़ायदा उठाकर ट्रोजन ग्रीकों पर पिल पड़े और उनकी सेनाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया। उनके एक जहाज में आग भी लगा दी।) - उपरांत

चंद्रप्रभु के जहाज़ को अग्नि-ज्वालाओं में लिपटे देखकर वज्रकाय का खून खौल उठा। उसने तो ठान लिया था कि वह या उसकी सेना ग्रीकों का साथ नहीं देंगे। उसने गंभीर परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर अपना निर्णय बदल लिया। ग्रीकों की सहायता के लिए तक्षण उसने अपनी सेना का एक टुकड़ा भिजवाया। वह भली-भाँति समझ गया कि प्रमोदिनी के प्रति उसमें जो आकर्षण है, उसका फ़ायदा ट्रोजन उठा रहे हैं। उसकी विमुखता ने ट्रोज़नों को प्रोत्साहित किया है। अगर अब ऐसी विकट स्थिति में भी हाथ धरे बैठेगा तो ग्रीकों को वे तहस-तहस करके ही छोड़ेंगे। उसे लगा कि कहीं मैं विश्वासघात तो नहीं कर रहा हूँ। इसीलिए उसने ऐसा निर्णय लिया।

इतने में पितृकीर्ति नामक एक ग्रीक योद्धा ट्रोजनों पर टूट पड़ा और शत्रुओं के दिलों को दहला दिया। जलते हुए ग्रीकों को जहाज़ के

चारों ओर ट्रोजन वलयाकार में घेरे हुए थे। पितृकीर्ति ने उनके मध्य एक शूल फेंका। एक वीर को वह शूल जा लगा और वह वहीं का वहीं ढेर हो गया। ट्रोजनों ने सोचा कि वज्रकाय पुन: रणरंग में प्रवेश कर चुका है और यह उसी का काम है। वज्रकाय ट्रोजनों के लिए सिंहस्वप्न था। इसलिए वे घबड़ा गये और वहाँ से भाग गये। कोई ऐसा नहीं था, जो ट्रोजनों को समझा सके और रोके। दुर्भाग्यवश वीरसिंह पहले ही भूधव के हाथों घायल हो चुका था और रणरंग को छोड़कर नगर लौट चुका था।

भयभीत ट्रोजनों को परास्त करनेवाले पितृकीर्ति ने चंद्रप्रभु के जहाज़ में लगी आग बुझायी और भागते हुए ट्रोजनों का पीछा किया। वह उस समय वज्रकाय का कवच पहने हुए था, इसलिए ट्रोजनों को वह वज्रकाय ही लगा।

पितृकीर्ति ने निश्चय किया कि किसी भी हालत में उसी दिन ट्रोय नगर को अपने वश में ले लेना चाहिये। नगर के चारों ओर के क़िले की दीवारों पर चढ़कर नगर-प्रवेश की उसने बारंबार कोशिश की, लेकिन ट्रोजनों ने उसे ऐसा करने नहीं दिया। वे उसके प्रयत्नों को असफल करने में सफल रहे।

अंधेरा छा जाते तक युद्ध होता ही रहा। धुँधले अंधेरे में किसी ने पितृकीर्ति की पीठ में छुरी भोंकी। उसका शिरस्त्राण गिर गया। उसके हाथ का शूल टूट गया। वह असहाय स्थिति में था। उसकी इस नि:सहाय स्थिति का फ़ायदा उठाकर एक ट्रोजन ने उसकी पीठ में एक और छुरी भोंकी। पितृकीर्ति बहुत ही घायल हुआ। आयुधहीन वह लड़खड़ाता हुआ जब युद्धक्षेत्र से लौट रहा था, तब वीरसिंह ने रणरंग में पुन: प्रवेश किया और पितृकीर्ति को मार डाला। इसके बाद उसने उसके शरीर पर से कवच निकाल लिया।

ठीक उसी समय पर प्रताप और भूधव वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने पितृकीर्ति के शव को शत्रुओं के हाथ लगने से बचा लिया और उसे लेकर अपने जहाज़ों के पास पहुँचे।

पितृकीर्ति की मौत की खबर सुनकर वज्रकाय मिट्टी में लोटता रहा और एक औरत की तरह बिलख-बिलखकर रोने लगा। उसकी माँ तरिनी ने फौरन ही एक नया कवच बनवाया और उसके शिबिर में लाकर उसे दिया। वज्रकाय ने उस कवच को पहनकर रराजा से समझौता कर लिया। रराजा को इससे भला और क्या चाहिये था? वज्रकाय के बिना उसका युद्ध जीतना असंभव था। उसने पहले ही उससे समझौते के प्रयत्न किये, किन्तु विफल रहा। अब वह सुनहरा मौक़ा अनायास ही उसके हाथ लगा। अब वह अपने को सशक्त व सुरक्षित मानने लगा। इस समझौते के बाद पितृकीर्ति की हत्या का प्रतिशोध लेने वज्रकाय युद्धक्षेत्र निकल पड़ा।

आवेशपूरित प्रलयरुद्र की तरह उग्र दीखनेवाले उस योद्धा वज्रकाय को देखकर ट्रोजन भय से काँप उठे। उसकी तलवार की धार के सामने वे टिक नहीं पाये और भाग चले। वज्रकाय ने उन्हें स्कमंदर नदी तक खदेड़ा। वहाँ उसने ट्रोजन सेना के दो भाग किये और गिन-गिनकर उनका वध किया। अपनी जान बचाकर भागे ट्रोजन उस समय भय से काँपते हिरणों-से लग रहे थे।

निःसंदेह ही वज्रकाय ग्रीक वीरों में अग्रगण्य था। ट्रोजनों में अग्रगण्य वीरों में से था वीरसिंह। लेकिन अब तक दोनों का आमना-सामना नहीं हुआ। तय हुआ कि अब वे दोनों एक दूसरे से लड़ेगें। उनके बीच होनेवाले इस युद्ध का क्या परिणाम होगा, यह देखने दोनों पक्षो ने युद्ध को रोक दिया। दोनों पक्षों को मालूम था कि यह युद्ध भविष्य का सूचक है। अंततः इस युद्ध में जीत किसकी होगी, इसके परिणाम पर आधारित है, क्योंकि दोनों महावीर परस्पर भिड़ रहे हैं।

प्रारंभ में वीरसिंह ने वज्रकाय का मुक़ाबला नहीं किया। उल्टे वह उससे दूर भागने लगा। इस प्रकार भागने में वीरसिंह का एक प्रत्येक उद्देश्य था। उसने सोचा कि चूँकि वज्रकाय बहुत समय से रणरंग से दूर रहता आया है, इसलिए दौड़ने पर वह जल्दी ही थक जायेगा और तब अपने हाथों उसकी हार निश्चित है।

किन्तु वीरसिंह की धारणा ग़लत साबित हुई। ट्रोय की दीवारों के चारों ओर तीन बार पीछा करने के बाद भी वज्रकाय बिल्कुल ही थका नहीं। आखिर वीरसिंह ने भागना छोड़ दिया और डटकर उसका मुक़ाबला किया। वज्रकाय जैसे ही उसपर टूट पड़ा, उसने वीरसिंह की छाती पर जोर से मुक्का मारा। वीरसिंह इस घात को सह नहीं पाया और नीचे गिर पड़ा। लोगों ने कल्पना तक नहीं की कि वीरसिंह की मौत इतनी आसानी से हो पायेगी। वह वज्रकाय के बलशाली मुक्के के कारण ही संभव हो पाया। मरते-मरते उसने वज्रकाय से प्रार्थना की कि उसका शव अपने लोगों को सौंपा जाए।

किन्तु वज्रकाय ने उसकी अंतिम इच्छा की परवाह नहीं की। उसने वीरसिंह के कवच को निकाल लिया। उसके पैरों को अपने रथ के पहिये से बाँध दिया और अपने जहाजों की ओर निकल पड़ा। वीरसिंह का शव मिट्टी में लोटता हुआ रथ के साथ-साथ गया।

इस प्रकार वज्रकाय की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। तब उसने पितृकीर्ति की अंत्यक्रियाएँ कीं। फिर उसने पितृकीर्ति के नौ शिकारी कुत्तों में से दो शिकरी कुत्तों को तथा बारह युद्ध-क़ैदी ट्रोजनों की बलि चढ़ायी। बलि चढ़ाये गये ट्रोजनों में से वर्धन के भी बहुत पुत्र थे। वज्रकाय तो चाहता भी था कि वीरसिंह का शव पितृकीर्ति के शिकारी कुत्तों को सौंपा जाए, पर उस विचार को उसने त्यजा।

पितृकीर्ति की अंत्यक्रियाओं के संदर्भ में स्पर्धाएँ भी हुई। रथों की होड़ में देवमय जीता। मल्लयुद्ध में रूपधर और भूधव समान रहे।

इतना सब कुछ करने के बाद भी वज्रकाय के प्रतिशोध की ज्वाला शीतल नहीं हुई। वह हर दिन सबेरे उठता और वीरसिंह के शव को, पितृकीर्ति की समाधि के चारों ओर तीन-तीन बार खींचकर ले जाता रहता था।

एक दिन रात के अंधेरे में ट्रोय राजा वर्धन ग्रीकों के शिविर में छिपे-छिपे आया। वह अपने पुत्र के शव को खरीदने के उद्देश्य से वज्रकाय के शिविर में आया। वज्रकाय उस समय मस्त नींद में था। अगर वर्धन चाहता तो वज्रकाय का वध आसानी से कर सकता था। लेकिन वर्धन ने ऐसा ना करके बड़ी उदारता व सज्जनता के साथ व्यवहार किया।

जब वज्रकाय नींद से जागा, तब दोनों में बातचीत हुई। निर्णय हुआ कि वीरसिंह के वज़न का सोना दिया जायेगा और शव ले जाया जायेगा। दोनों पक्षों ने इसकी स्वीकृति दी। ग्रीकों ने ट्रोयनगर की दीवार के बाहर एक बड़ा तराजू खड़ा कर दिया। उनकी माँग थी कि एक पलड़े में वीरसिंह का शव रखा जाए और दूसरे पलड़े में उसी वज़न का सोना रखा जाए।

ट्रोजन वर्धन के खज़ाने से सोना, गहने आदि ले आये। उन्हें तराजू के एक पलड़े में रखते गये। पर, वीरसिंह का शव ही भारी रहा। अब वर्धन की पुत्री प्रमोदिनी ने अपने

वर्धन अपने पुत्र वीरसिंह के शव को ले गया और यथावत् अंत्यक्रियाएँ पूरी कीं। उस समय ट्रोजनों के रोदन की ध्वनि आकाश को छू रही थी। वीरसिंह की मृत्यु ने उन्हें दुख और भय से भर दिया।

वज्रकाय ने प्रमोदिनी से विवाह रचाकर युद्ध को समाप्त करने की योजना तो बनायी लेकिन उसे क्या पता था कि ऐसा करके स्वयं अपनी मृत्यु को आह्वान दे रहा था। युद्ध समाप्त हो जाने के उद्देश्य से प्रमोदिनी ने तात्कालिक रूप से इस प्रस्ताव को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु अब भी उसने वज्रकाय को माफ़ नहीं किया, क्योंकि उसने उसके भाई इलिय की दारुण हत्या की। उसके हृदय में प्रतिशोध की ज्वाला भड़क रही थी। वह जानती थी कि वज्रकाय ही के कारण ग्रीक बलशाली हैं। अगर उसे सदा के लिए सुला दिया जाए तो ट्रोजनों की जीत निश्चित है।

कंकण निकाले और पलड़े में रखा।

वज्रकाय तो प्रमोदिनी पर पहले से ही लट्टू था। उसके इस काम को देखकर वज्रकाय ने वर्धन से कहा "मुझे आपका सोना नहीं चाहिये। प्रमोदिनी से मेरी शादी कीजिये और भुवनसुंदरी को प्रताप के हवाले कीजिये। ऐसा होने पर दोनों शत्रु-पक्षों में संधि होगी। इसका उत्तरदायित्व मुझपर है।"

"चाहो तो प्रमोदिनी से तुम विवाह कर सकते हो, किन्तु हर हालत में भुवनसुंदरी को हम प्रताप के सुपुर्द नहीं करेंगे। हमारी यह शर्त मानते हो तो संधि का प्रबंध करो।" वर्धन ने कहा।

वज्रकाय ने कहा " प्रयत्न करूँगा "।

प्रमोदिनी ने ऐसा नाटक किया मानों वह वज्रकाय को बहुत चाहती हो। उसने गुप्त रूप से जान भी लिया कि वज्रकाय का प्राण-रहस्य क्या है? वज्रकाय ने प्रेम के नशे में उससे बता दिया कि उसके दायें पैर के तलुवे में उसकी मौत है। उसकी माँ ने उसके बाल्यकाल में उस तलुवे को ही नदी में डुबोया था, जिससे वह इतना शक्तिवान बन पाया।

"तुम बिना किसी हथियार के नंगे पैरों सूर्य के मंदिर में आ जाओ। वहाँ सूर्य भगवान

को बलियाँ चढ़ायेंगे और दोनों विवाह करेंगे। प्रमोदिनी ने वज्रकाय से कहा।''

वज्रकाय उसी प्रकार मंदिर आया। तब यहाँ प्रमोदिनी के साथ उसके कुछ आप्त बंधु थे। उसका बड़ा भाई अरिभयंकर भी वहाँ उपस्थित था। उसने वज्रकाय पर इतना प्रेम लुटाया, मानों उसे वह बहुत चाहता हो। उसने वज्रकाय को अपने आलिंगन में लिया। इसी समय मोहन, मूर्ति के पीछे छिपकर वज्रकाय के दायें पैर के तले एक विषैला बाण बेधा। फिर भी वज्रकाय तुरंत ही नहीं मरा। मंदिर के अग्निकुंड से दो मशालें दोनों हाथों में लीं और उनसे ट्रेजनों को मारने लगा।

ग्रीकों के शिविर में बैठे रूपधर और भूधव को संदेह हुआ कि वज्रकाय ही कोई षड़यंत्र रच रहा है। उन्हें मालूम नहीं था कि प्रमोदिनी से शादी करने पर युद्ध को समाप्त करने का वह वचन दे चुका। अकेले ही वज्रकाय को मंदिर जाते हुए देखकर ग्रीक छिपे-छिपे वहाँ यह जानने के लिए आये कि वहाँ क्या हो रहा है।

रूपधर, भूधव, देवमय ने मंदिर के अंदर आकर देखा कि वज्रकाय अंतिम साँस ले रहा है। तब वज्रकाय ने उनसे कहा ''ट्रोय नगर जब वश में आ जायेगा तब मेरी समाधि के पास ही प्रमोदिनी की बलि चढ़ाइये।'' महाबली भूधव ने वज्रकाय के शरीर को अपने कंधे पर डाल लिया। तीनों योद्धा मंदिर के बाहर आये।

वज्रकाय की माता तरिनी का दुख अपार था। उसके साथ-साथ ग्रीकों ने सत्रह दिनों तक शोक मनाया। अठारहवें दिन वज्रकाय का शव अग्नि को समर्पित किया। उसके चिता भस्म के साथ-साथ पितृकीर्ति का भी चिता-भस्म सोने के एक कलश में रखा गया और उनकी स्मृति में पत्थरों का एक टीला खड़ा किया। उस स्थल के समीप के गाँव का नाम रखा गया वज्रकाय। उसके नाम पर उस गाँव में एक मंदिर भी बनवाया। उसमें उसकी मूर्ति की भी प्रतिष्ठापना की, स्त्रीयों के कानों में पहनाये जानेवाले आभूषणों से भरी यह मूर्ति अब भी इस मंदिर में देखी जा सकती है।
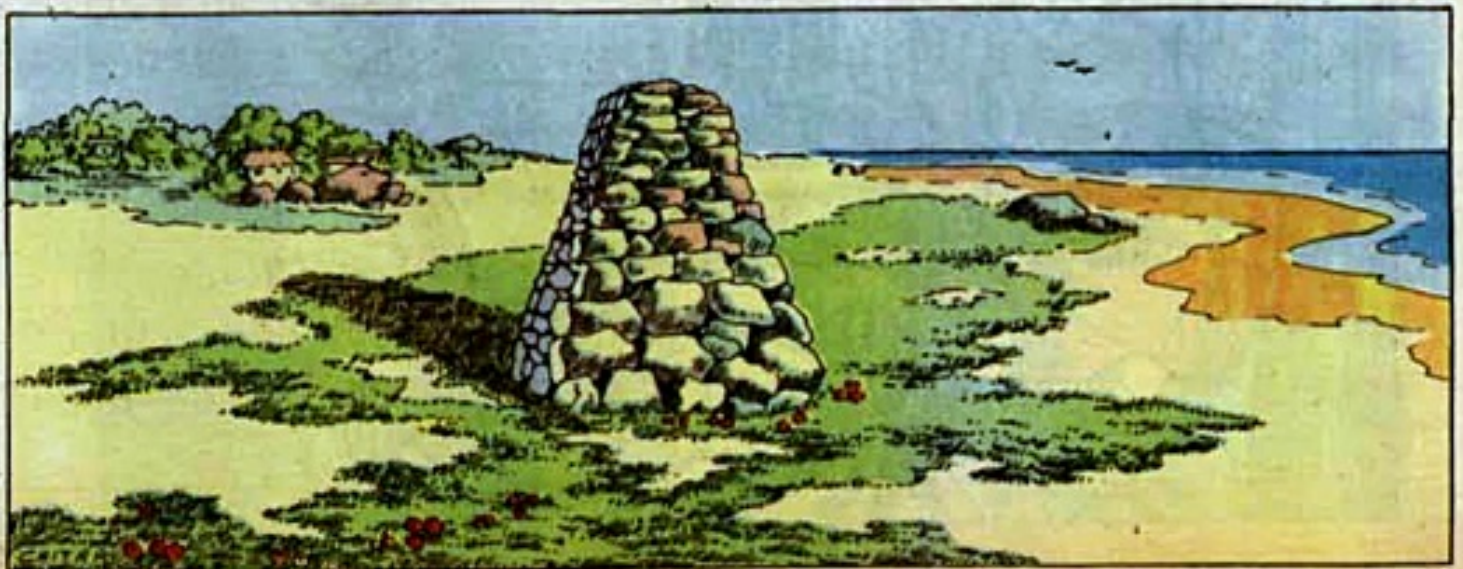
# गहनों का व्यापारी

नागराज बेलापुरी का निवासी था। अपनी बेटी की शादी उसी नगरवासी शेखर से करायी। उसका दोस्त विश्वनाथ उस विवाह के अवसर पर तीर्थयात्रा पर गया हुआ था। जब वह तीर्थयात्रा से लौटा तो उससे आकर मिला।

विश्वनाथ ने अपने मित्र से पूछा "तुम्हारी पुत्री के विवाह पर आ नहीं सका। तुम्हारा दामाद क्या काम करता है।" नागराज चिंतित होता हुआ बोला "सोने के गहनों की बिक्री करता है।" "यह तो बहुत अच्छा काम है। वह बात बताते हुए तुम्हें दुख क्यों हो रहा है ?" आश्चर्य में डूबे विश्वनाथ ने पूछा।

दोनों ने कुछ समय तक इधर-उधर की बातें की। फिर थोड़ी देर बार नागराज ने अपने दामाद की तस्वीर विश्वनाथ को दिखायी।

उस दिन शाम को विश्वनाथ अपने एक दोस्त कोदंड के गहनों की दुकान में बैठा हुआ था। उस समय वहाँ एक युवक आया और उसने कोदंड को रत्नखचित हार दिखाया। उसे देखते ही विश्वनाथ पहचान गया कि यह युवक नागराज का दामाद है। वह उस हार को भी पहचान गया, जिसे बेचने वह ले आया था। वह हार नागराज ने अपनी बेटी के लिए बनवाया था।

अब नागराज की परेशानी विश्वनाथ की समझ में आयी। वह जान गया कि नागराज ने दुखी हो ऐसा क्यों कहा कि मेरा दामाद सोने के गहनों की बिक्री का काम करता है।

-प्रताप नारायण

# राजकुमारी की जल्दबाज़ी

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। शव को पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। मौन् यथावत् श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा " राजन्, तुम्हारा धैर्य सराहनीय है। तुम्हारा हठ अनुकरणीय है। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए जो कठोर परिश्रम कर रहे हो, असमान है। इस भयंकर अंधकार में मुसीबतों का सामना करने का तुम्हारा मनोबल अतुलनीय है। तुम्हें इस स्थिति में देखकर कोई भी अवाक् रह जायेगा, आश्चर्य में डूब जायेगा। इतना परिश्रम करने के बाद जब तुम्हें उसका फल प्राप्त होगा, तो क्या उससे तुम तृप्त रह पाओगे ? नहीं तो स्वर्णपुरी की राजकुमारी सुलक्षणा की तरह विवेकहीन तथा असंगत निर्णय लेकर सुवर्ण अवसर को अपने हाथ से फिसल जाने दोगे ? मैं मानता हूँ कि कुछ लक्ष्यों की सिद्धि के लिये परिश्रम

## बैताल कथा

"पिताश्री, हम भाग्यवान है कि शिवालय हमारे ही राज्य की सीमा में प्रकट हुआ है। चार-पाँच महीनो में मैं वहाँ शिव भगवान का एक अद्भुत मंदिर बनवाऊँगी । इस निर्माण-कार्य का पर्यवेक्षण मैं स्वयं करूँगी।"

शूरवर्मा ने स्वीकृति दी। शुभ मुहूर्त पर शिवालय के पुनरुद्धार का कार्य आरंभ हुआ। सुलक्षणा उसी पहाड़ के पास रहकर मज़दूरों और शिल्पियों को आवश्यक सूचनाएँ व सलाहें देती रहती थी। बड़े चाव से मंदिर के निर्माण-कार्यों का पर्यवेक्षण कर रही थी।

एक दिन दुपहर को आराम करते समय उसे दूर से मुरली की मधुर ध्वनि सुनायी पड़ी। सब लोग अपने-अपने कामों में रत थे। किन्तु सुलक्षणा उस तरफ़ बढ़ी, जहाँ से मुरली की ध्वनि आ रही थी। मुरली की मधुर ध्वनि ने उसे इतना आकर्षित कर दिया कि वह अकेली ही उस ओर चल पड़ी।

एक जगह पर हरे-भरे मैदान में कुछ बकरियाँ चर रहीं थीं। पच्चीस साल का एक युवक आँख मूँदकर तन्मय हो मुरली बजा रहा था। वह एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। उसका सौंदर्य देखकर सुलक्षणा स्तब्ध रह गयी।

जब युवक ने आँखें खोलीं और सामने खड़ी युवती को देखा तो वह एकदम चौंक पड़ा। सुलक्षणा मुस्कुराती हुई बोली "मैं राजकुमारी सुलक्षणा हूँ। तुम्हारा मुरली-गायन मुझे बहुत भाया। तुम कौन हो ?

व सहनशक्ति आवश्यक है। किन्तु फल का उपयोग हो सकता है केवल विवेक तथा लोकज्ञान से। उदाहरणस्वरूप मैं तुम्हें राजकुमारी सुलक्षणा की कथा सुनाता हूँ। ध्यान से सुनो और अपने विचार व्यक्त करो" यों बेताल सुनाने लगा।

बहुत पहले पूर्वी समुद्री तट के पहाड़ी प्रांतों में भारी वर्षाएँ हुईं। ज़ोर की भी हवा भी चली। इस आँधी के कारण पहाड़ी प्रांतों में एक जगह पर एक प्राचीन शिवालय उभर आया। उस प्रांत के शासक स्वर्णपुरी के राजा शूरवर्मा को यह समाचार मालूम हुआ।

शूरवर्मा की पुत्री सुलक्षणा बड़ी ही शिवभक्त थी। उसने अपने पिता से कहा

तुम्हारा नाम क्या है ?''

उस युवक ने कहा ''मेरा नाम गोविंद स्वामी है।'' उसने सुलक्षणा को प्रणाम किया और बकरियों को हाँकता हुआ वहाँ से चला गया।

उस दिन से सुलक्षणा हर रोज उससे मिलती रही। उसे जो गीत अच्छे लगते थे, उन्हें गोविंद से मुरली पर बजवाकर सुनती थी। गोविंद सुलक्षणा को मुरली बजाना भी सिखाता था। वह उसे रहन-सहन की पद्धतियाँ, दूसरों से बातें करने के तौर-तरीक़े सिखाती थी। एक महीने के अंदर दोनों अच्छे दोस्त बन गये। एक दूसरे के प्रति दोनों में प्रेम-भावना जगती गयी। किन्तु लज्जावश दोनों व्यक्त ना कर सके। उन्हें मन ही मन लगता था कि हम दोनों अटूट बंधन में बंध जाएँ।

एक दिन सुलक्षणा जब मुरली बजा रही थी, तब वह खाँस पड़ी। यह देखकर गोविंद ने कहा ''समीप ही एक दादी है, जिसे मैं बचपन से जानता हूँ। उसकी झोंपड़ी के पीछे एक कुआँ है। उस कुएँ का पानी नारियल के पानी की तरह मीठा होता है।'' यह कहकर वह सुलक्षणा को थोड़ी ही दूरी पर स्थित दादी की झोंपड़ी के पास ले गया।

झोंपड़ी के चारों ओर हरे-भरे पेड़ थे। फूलों के पौधे थे। पर्णशाला की मानिंद दिखनेवाली उस झोंपड़ी को देखकर सुलक्षणा चकित रह गयी। पैरों की आहट सुनकर बूढ़ी बाहर आयी और सुलक्षणा को देखकर पूछा ''बेटी तुम कौन हो? मेरी बातों का बुरा ना मानना। गोविंद जितना सुँदर है, उतनी ही सुँदर हो तुम।''

यह सुनकर सुलक्षणा शरमा गयी। गोविंद के कहने पर दादी झोंपड़ी से एक लोटे में पानी ले आयी। सुलक्षणा ने पानी पीकर कहा ''तुम्हारे इन फूलों की जैसी अद्‌भुत सुगंध तो मैंने पहले कभी भी नहीं सूँघी। दादी, मुझे यह जगह बहुत अच्छी लगी। सचमुच कितना मनमोहक है।''

''यह मौलसिरी की सुगंध है'' कहती हुई बूढ़ी ने जमीन पर गिरे मौलसिरी के फूलों को चुना और एक गजरा बनाया। बहुत ही खुश होती हुई उस गजरे को सुलक्षणा ने

बालों में लगाया।

इसके बाद गोविंद उसे लेकर पहाड़ी मोड़ तक आया और बकरियों को हाँकता हुआ चला गया। उसी दिन सुलक्षणा ने निर्णय कर लिया कि अगर मैं शादी करूँगी तो गोविंद स्वामी से ही करूँगी।

उस दिन रात को राजकुमारी के कक्ष में राजा शूरवर्मा आया और अपनी बेटी सुलक्षणा से बोला "पुत्री, उदयगिरि के युवराज ने तुमसे विवाह का प्रस्ताव भेजा है। हमें जानना भी तो है कि वह तुम्हारे योग्य है या नहीं। इसलिए मैंने उसे दो-तीन दिनों के लिए यहाँ आकर ठहरने का निमंत्रण दिया है। कल शाम तक वह यहाँ पहुँच जायेगा। इन दो-तीन दिनों में तुम उसके स्वभाव से भी अच्छी तरह परिचित हो पाओगी। मैं नहीं चाहता कि मैं तुम्हारा विवाह तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध करूँ।"

उस समय गोविंद की बात उठाने का साहस सुलक्षणा कर ना सकी।

दूसरे दिन दुपहर को सुलक्षणा ने गोविंद से इस बात का ज़िक्र किया और कहा "उस उस युवराज को मैं अवश्य ही अच्छी लगूँगी। मुझे उसके अच्छे लगने का सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि मैं विवाह करूँगी तो तुम्हीं से करूँगी। फिर भी पिताश्री से मैं कहने का साहस नहीं कर पा रही हूँ। अगर वे उस राजकुमार से ही मेरी शादी करने का आग्रह करेंगे और मेरी इच्छा के विरुद्ध निर्णय लेंगे तो मेरी स्थिति संकटमय होगी। मेरी समझ में नहीं आता, मैं क्या करूँ?"

गोविंद ने कहा "तो चलो, दादी से परामर्श करेंगे।"

दोनों दादी के यहाँ गये। सुलक्षणा ने दादी को पूरा विवरण दिया और कहा "मेरे पिताश्री मेरी अभिलाषा का तिरस्कार नहीं करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि गोविंदस्वामी पिताश्री को पसंद आयेगा। लेकिन इसे अपने पिता तक ले जाने का साहस मुझमें नहीं है।

दादी ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा "हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं। बात तो बिल्कुल सीधी है। गोविंदस्वामी गोविंदस्वामी

की तरह नहीं, बल्कि राजकुमार मणिदत्त की तरह तुम्हारे पिता के पास जायेगा। यह तुम्हारे पिता से मिलेगा। तुम्हें तो पूरा विश्वास है कि गोविंद अवश्य ही तुम्हारे पिता को अच्छा लगेगा। बस, कहानी सुखांत होगी।"

उदयगिरि के युवराज को नगर पहुँचना हो तो पहाड़ी मार्ग से होते हुए गुज़रना पड़ेगा। अलावा इसके, कोई दूसरा रास्ता है नहीं। दादी ने गोविंद से बताया कि जब वह उसकी झोपड़ी के पास आयेगा, तो उसे क्या करना चाहिये।

संध्या समय तक श्वेत अश्व पर राजा की पोशाक में मणिदत्त उस प्रदेश में आया।

दादी अकस्मात् उसके सामने गयी और बोली "बेटे नाग, मेरी बात सुनो। खाना खाकर ही तुम जा सकते हो।" कहती हुई वह घोड़े के सामने खड़ी हो गयी। मणिदत्त उसकी बातों पर आश्चर्य प्रकट करता हुआ बोला "दादी, मैं नाग नहीं हूँ। मैं उदयगिरि का युवराज मणिदत्त हूँ।" कहता हुआ वह घोड़े से उतरा।

वहीं खड़े गोविंद मणिदत्त को थोड़ी दूर ले जाकर बोला "महाशय, नाग इस दादी का एकमात्र पोता है। वह राजा का सैनिक था। बहुत सालों पहले पड़ोसी राजा ने इस राज्य पर चढ़ाई की। राजा ने युद्ध की घोषणा की। घोषणा सुनते ही खाना खाता हुआ नाग उठ खड़ा हुआ और दादी के मना करने पर भी तलवार लेकर बाहर दौड़ पड़ा। उस समय जो युद्ध छिड़ा, उसमें वह मर गया। तब से

दादी पागल हो गयी। आप आज का खाना उसके हाथों खायेंगे तो उसे बड़ी तृप्ति होगी। कृपया उसकी प्रार्थना को अस्वीकार करके उसके मन को मत दुखाइये। वह तो अपने पोते की याद में पागल हो गयी है। उसकी इच्छा की पूर्ति करके उसके संतप्त हृदय को शांत कीजिये।'' उसने यों एक कहानी गढ़ी। राजकुमार से विनयपूर्वक प्रार्थना की।

दया, करुणा आदि गुणों से भरे मणिदत्त ने दादी के कंधे पर हाथ रखकर कहा ''दादी, मुझे बड़ी भूख लगी है। खाना खिलाओ।''

दादी ने फ़ौरन उसके लिए खाना परोसा। मणिदत्त तो खाना नहीं चाहता था, लेकिन बूढ़ी दादी को संतुष्ट करने के लिए संतृप्ति का नाटक करता हुआ, खाने लगा। खाना खाकर वह थोड़ी देर सुस्ताने पलंग पर लेट गया। दादी एक लोटे में उसके लिए गरम दूध ले आयी। उस दूध को पीने के दूसरे ही क्षण मणिदत्त गाढ़ी निद्रा में चला गया।

तब दादी ने गोविंदस्वामी से कहा ''उस दूध में मैंने जड़ी-बूटियों का रस निचोड़ा है। युवराज कल शाम को ही जागेगा। तुम इसके कपड़े पहन लो और घोड़े पर राजभवन पहुँचो।''

गोविंदस्वामी ने मणिदत्त बनकर राजभवन में प्रवेश किया। सुंदर व सुडौल गोविंदस्वामी राजा शूरवर्मा को बहुत अच्छा लगा। उसने अपनी पुत्री से कहा ''तुम भाग्यशाली हो। तुम्हारा होनेवाला पति बिल्कुल कामदेव जैसा सुंदर है।''

सुलक्षणा बहुत ही आनंदित हुई। दूसरे दिन शाम को उनके नौका-विहार का प्रबंध किया शूरवर्मा ने। विहार के लिए निकलने के पहले एक परिचारिका सुलक्षणा के कक्ष में आयी और बोली ''राजकुमारी, कोई बूढ़ी आपके लिए मौलसिरी का गजरा ले आयी है। वह हठ कर रही है कि स्वयं मैं यह गजरा राजकुमारी को दूँगी।''

मौलसिरी की बात सुनते ही सुलक्षणा ताड़ गयी कि यह बुढ़िया कौन है। उसने उसे अंदर भेजने को कहा। दादी आते ही बोली ''राजकुमारी, वह राजकुमार तेज़ बुखार से पीड़ित है। मैंने दवाएँ दीं, लेकिन उनका

उसपर कोई असर नहीं पड़ा। वह होश में नहीं आया। मुझे उसकी हालत देखकर बहुत डर लग रहा है। भगवान करे, वह बिल्कुल ठीक हो जाए। तुम आस्थान के वैद्य को लेकर वहाँ तुरंत पहुँच जाना।''

दादी को भिजवाकर सुलक्षणा उद्यानवन में गयी, जहाँ गोविंदस्वामी उसकी बाट जोह रहा था। उसने उससे पूरी बात बतायी और कहा ''मैं नौका-विहार पर नहीं आ सकती। राज-वैद्य को लेकर दादी के यहाँ जा रही हूँ।''

''मेरी समझ में नहीं आता कि राजकुमार के बारे में तुम इतनी परेशान क्यों हो? हमारा कार्यक्रम तो पहले से ही निश्चित है। तुम्हारी यह घबराहट मेरी समझ में नहीं आ रही है। तुम्हारा नौका-विहार पर ना आना अच्छा नहीं होगा।'' निराशा से भरे गोविंद ने कहा।

सुलक्षणा मौन वहाँ से चली गयी और राजवैद्य को लेकर दादी की झोंपड़ी पर गयी।

बेहोश मणिदत्त के माथे पर राजवैद्य ने कुछ चूर्ण लेपे। उसने फिर कहा ''रोगी एक दो घंटों में होश में आ जायेगा। डरने की कोई बात नहीं। होश में आने के बाद ये दो गोलियाँ निगलवाओ।'' उसने सुलक्षणा से बताया।

वैद्य को लगा कि दाल में काला कुछ अवश्य है। वह सीधे शूरवर्मा के पास गया और पूरा हाल सुनाया।

शूरवर्मा फ़ौरन कुछ सैनिकों के साथ दादी की झोंपड़ी पर आया। उस समय तक मणिदत्त होश में थोड़ा-बहुत आ चुका था। वह धीरे-धीरे बात कर पा रहा था। सुलक्षणा आँसू बहाती हुई श्रद्धापूर्वक सुन रही थी।

शूरवर्मा ने बेटी की तरफ़ यों देखा, मानों वह जानना चाहता है कि यह सब क्या हो रहा है। वह पिता का हाथ पकड़कर उसे दूर ले गयी और गुजरी घटनाओं का पूरा ब्योरा दिया। उसने कहा ''मेरी ही प्रेरणा से गोविंदस्वामी राजभवन में आया था। हठात् अस्वस्थ होकर राजकुमार यहाँ फँस गया है।''

शूरवर्मा को गोविंदस्वामी सब तरह से पसंद आया, इसलिए वह अपनी बेटी पर नाराज़ नहीं हुआ। उसने बेटी से कहा

"जल्दबाज़ी से भरे ऐसे निर्णय समुचित नहीं होते। पहले तुम मणिदत्त से क्षमा माँगो। गोविदस्वामी से तुम्हारा विवाह निरांटक संपन्न होगा।" "क्षमा कीजिये पिताश्री, मैं अब जान गयी हूँ कि मेरा पहला निर्णय जल्दबाज़ी में लिया गया निर्णय है। मैं मणिदत्त से क्षमा माँगूंगी। लेकिन यह क्षमा गोविंदस्वामी से विवाह करने के लिए नहीं, बल्कि मणिदत्त से ही विवाह करने।"

बेताल ने कहानी सुनायी और कहा "राजन्, राजकुमारी को पहले भय था कि गोविंदस्वामी से विवाह करना पिता को शायद पसंद ना आये, लेकिन उसके पिता ने इस विवाह पर कोई आपत्ति नहीं उठायी। फिर भी, उसने गोविंदस्वामी का तिरस्कार किया और मणिदत्त से शादी करने सन्नद्ध हो गयी। मुझे तो उसका यह निर्णय अविवेकपूर्ण और असंगत लगता है। जानते हुए भी मेरे संदेहों की निवृत्ति नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा "गोविंदस्वामी स्वयं सोचने की शक्ति नहीं रखता। ऊपर से वह स्वार्थी है। जिस बूढ़ी को मणिदत्त जानता तक नहीं था, उसकी तृप्ति के लिए उसने राजभवन की यात्रा भी मुल्तवी की। इससे यह स्पष्ट है कि वह दयालू है, दूसरों के दुखों को दूर करने की प्रवृत्ति उसमें है। गोविंदस्वामी का स्वभाव इससे बिल्कुल ही विपरीत है। उसने झूठी कहानी गढ़ी, जिसका विश्वास करके मणिदत्त ठहर गया। वह अस्वस्थ हो गया। जब वास्तविकता उसे मालूम हुई, तब भी उसमें मणिदत्त के प्रति कोई सहानुभूति नहीं जगी। ऐसा स्वार्थी, दयाहीन व कठोर व्यक्ति अगर मेरा पति बने तो भविष्य में इस देश का पर क्या गुजरेगा, सुलक्षणा समझ गयी। इसीलिए उसने गोविंदस्वामी का तिरस्कार किया और मणिदत्त से विवाह करने का निश्चय किया।"

राजा का मौनभंग करने में बेताल सफल हुआ। वह शव को लेकर ग़ायब हो गया।

आधार : महर्षि भट्टाचार्य की रचना

## प्राचीन दुर्ग

### हमारे देश के क़िले - २

दिल्ली में जितने क़िले हैं, उतने किले हमारे देश के किसी भी नगर में नहीं हैं। कहा जाता है कि पांडवों की राजधानी इंद्रप्रस्थ यहीं था। किन्तु इसे प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त आधार अभी तक प्राप्त नहीं हुए। अब जहाँ कुतुबमीनार है, वहाँ अनंगपाल नामक तोमार राजा ने ई.स. ७३७ में लाल क़िले का निर्माण किया और यह दावे के साथ कहा जा सकता है। चार सौ वर्षों के बाद पृथ्वीराज चौहान ने उसी स्थल पर और एक क़िले का निर्माण किया। पृथ्वीराज को राय पिथोरा के नाम से पुकारते थे। अतः यह क़िला भी घर राय़ पिथोरा के नाम से प्रसिद्ध है।

## लाल क़िला

रचयिता : मीरा उग्रा
चित्र : गौतम सेन
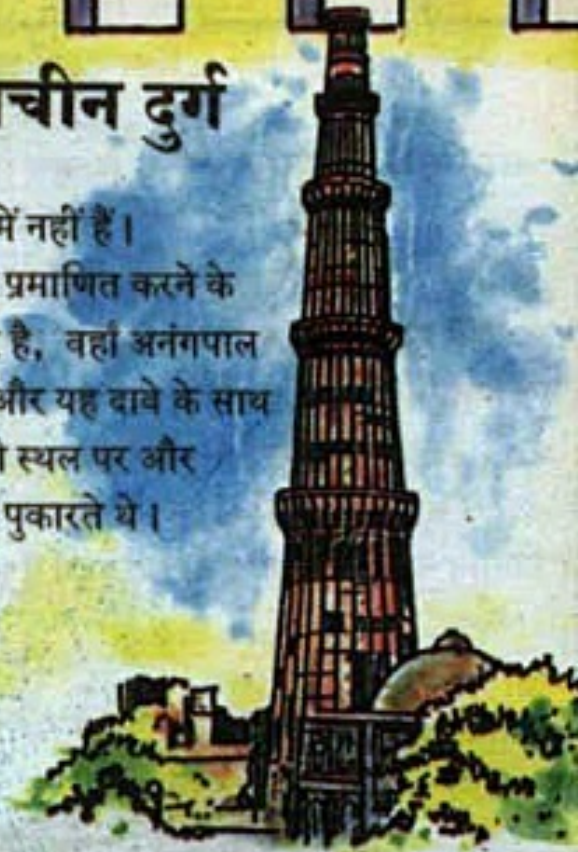
ई. स. १३०३ में अल्लाउद्दीन खिलजी ने कोषक-ऐ-सिरि के नाम से एक क़िला बनवाया। १९८२ में इसी क़िले के मैदान में एशियन क्रीड़ाएँ संपन्न हुई। खिलजी के वंशजों के बाद तुगलक के वंशजों ने हुकूमत अपनी हाथ में ली। मंगोलिनियों के आक्रमण से अपनी रक्षा के लिए शियासुद्दीन, महम्मद, फिरोज़ शा नामक तीन तुगलक राजाओं ने तीन अलग-अलग क़िले बनवाये, जिनके नाम हैं; तुगलकाबाद, अदिलाबाद (जहाँपनाह) फिरोज़ शा कोटला। अब उनकी ऊँची-ऊँची दीवारें और बुर्ज ही देखने को मिलते हैं। जिन्हें देखकर उन क़िलों का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।
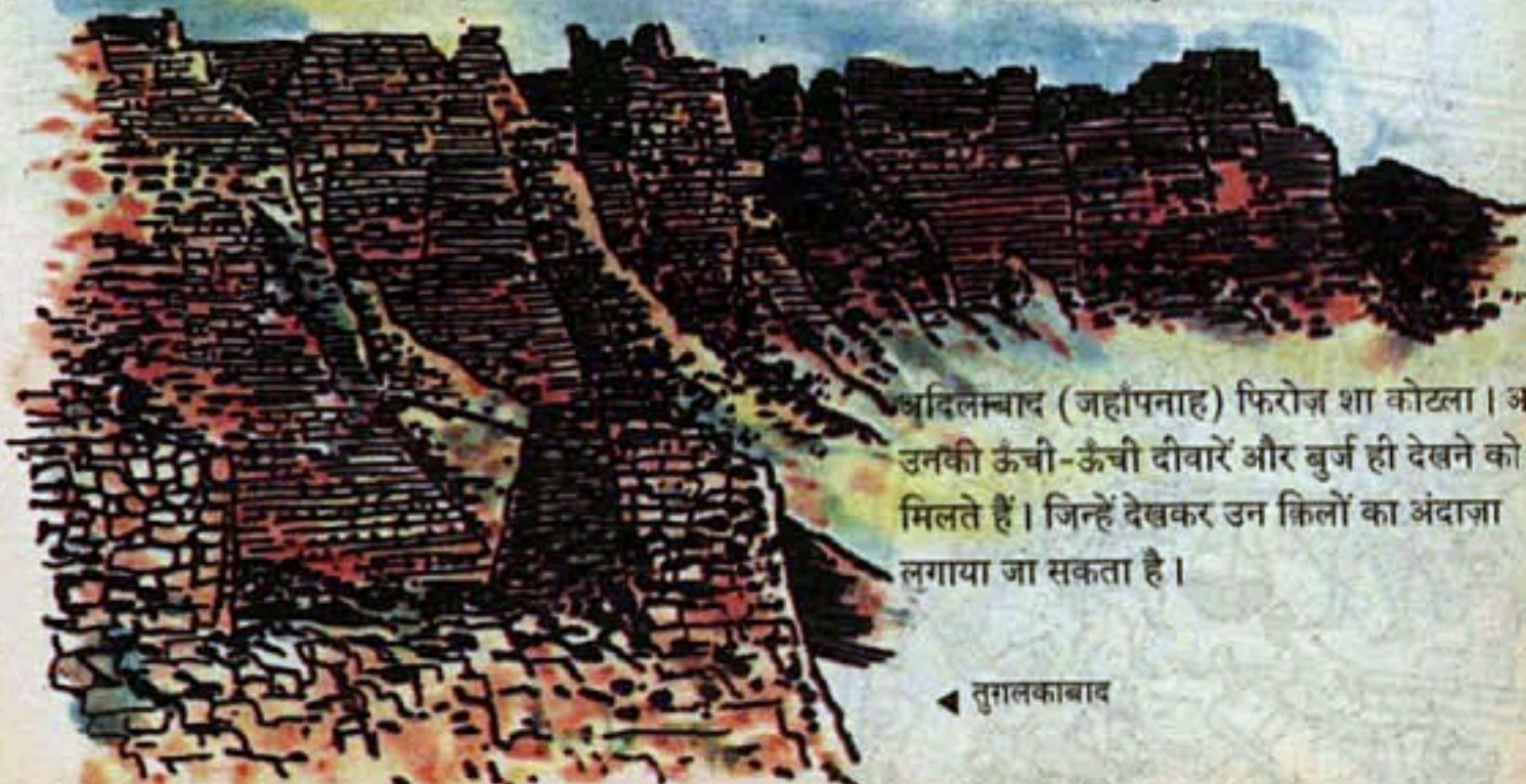
◄ तुगलकाबाद

आज जो क़िला 'पुराना क़िला' के नाम से पुकारा जाता है, उसका निर्माण- कार्य प्रारंभ किया, द्वितीय मुगल बादशाह हुमायूँ ने। उसे पूरा किया शेरशाह सूर ने। अकबर ने आगरा को अपनी राजधानी बनायी। उसने बादलघड नामक एक क़िले को हथियाया और उसे ही मज़बूत बनाया। लाल ईंटों से बनाये जाने के कारण इसका नाम पड़ा लाल क़िला। यह विलक्षण तथा सदृढ़ दुर्ग है।
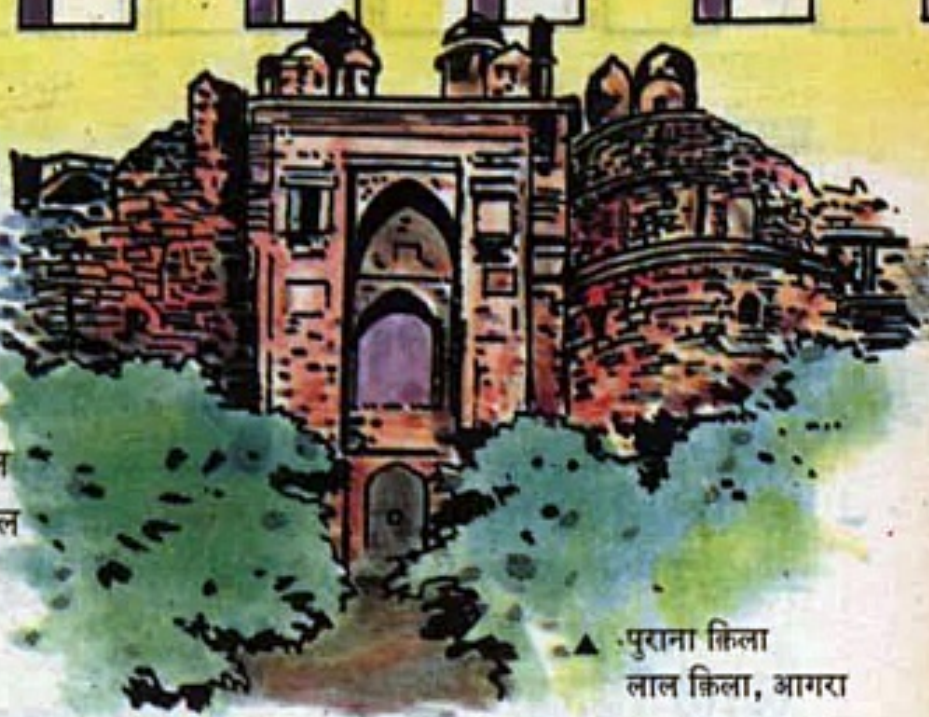
▲ पुराना क़िला
लाल क़िला, आगरा
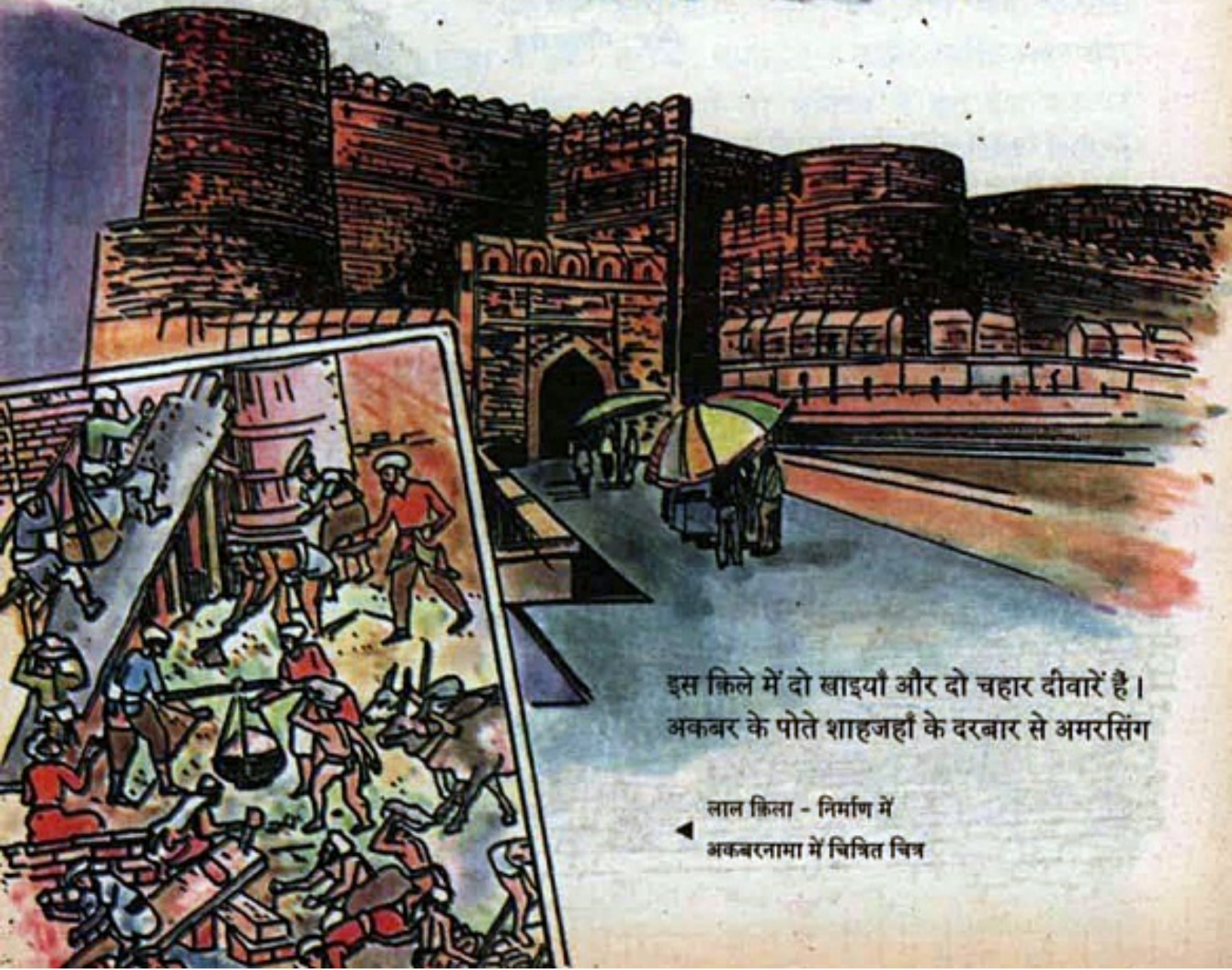
इस क़िले में दो खाइयाँ और दो चहार दीवारें है। अकबर के पोते शाहजहाँ के दरबार से अमरसिंग

◄ लाल क़िला - निर्माण में
अकबरनामा में चित्रित चित्र

राठौड नामक एक राजपूत सेनाधिपति साहसपूर्वक भाग गया। इसके आधार भी हैं। सलावत खान नामक खजाँची उसके विरुद्ध अक्सर साज़िशें किया करता था। राठौड उसपर एक बार बहुत नाराज़ हो गया और जोश में आकर उसे मार डाला। शाहजहाँ के सैनिकों ने उसका पीछा किया। जब वह पीछे पड़े सिपाहियों से भाग रहा था, तब क़िले का प्रधान द्वार बंद पड़ा था। घोड़े पर सीढियों से होता हुआ क़िले के बुर्जों पर चढ़कर तीस-फुट की ऊँचाई की दीवार से कूद पड़ा और अपने को बचा लिया। तब तक वह 'अकबर दरवाज़ा' कहलाया जाता था। इस कारण तब से वह 'अमरसिंग दरवाज़ा' के नाम से पुकारा जाता है।
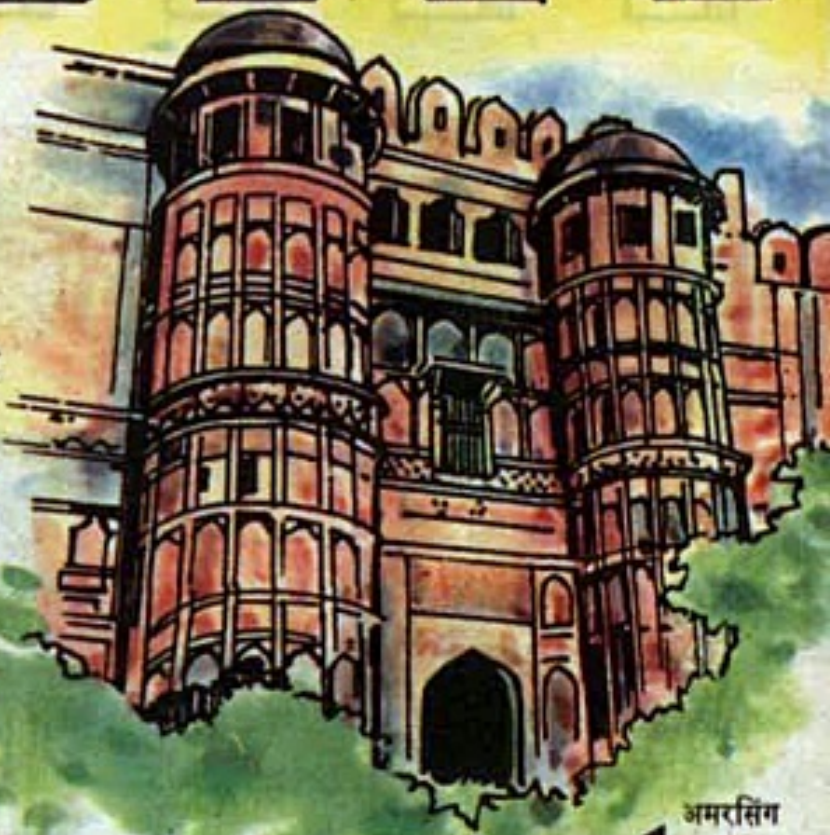
◀ अमरसिंग दरवाज़ा

◀ दीवान-ए-आम (सभामंडप) लाल क़िला, दिल्ली
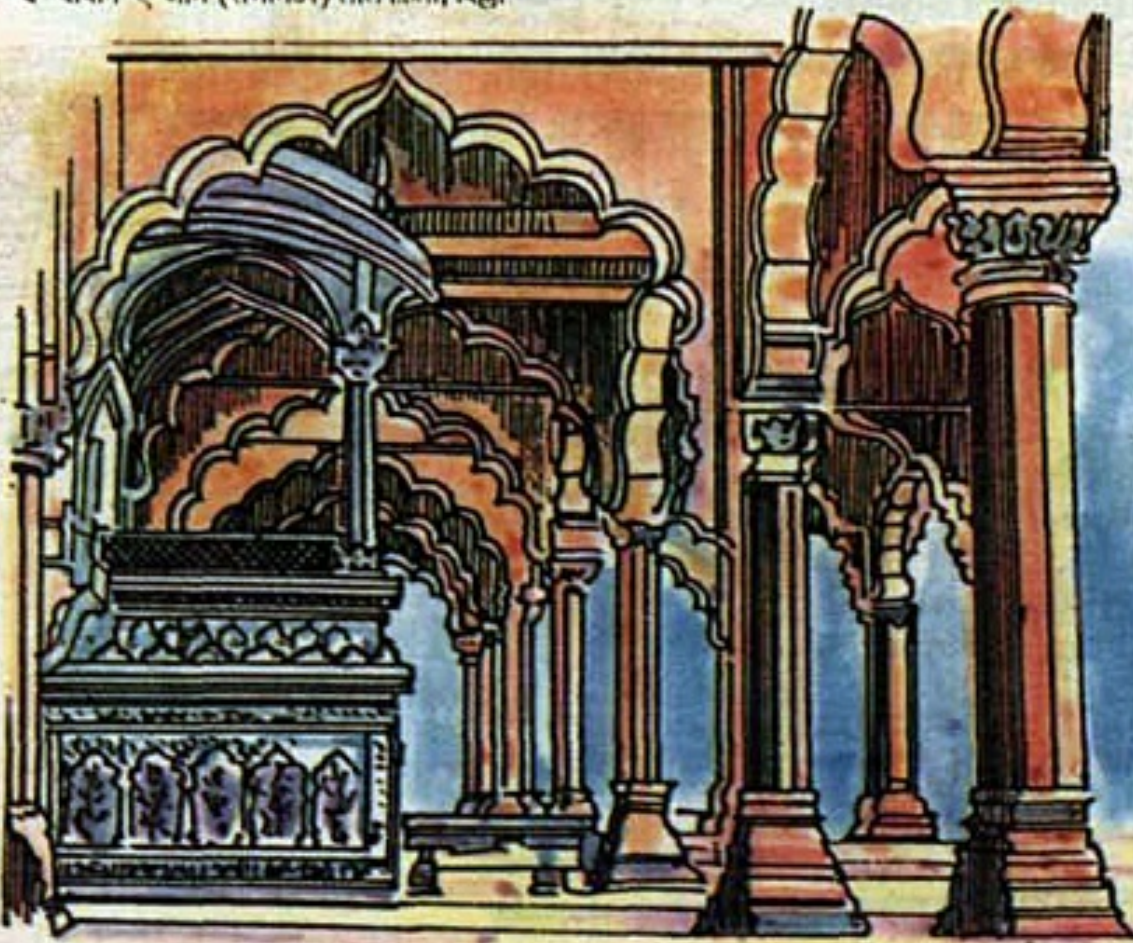
शाहजहाँ ने दिल्ली अपनी राजधानी बनायी। शाहजहाँबाद में १२ मई १६३९ को एक क़िले का निर्माणकार्य शुरू किया। आगरे के क़िले की ही तरह इसे भी बनाया लाल ईंटों से, इसलिए इसका भी नाम पड़ा लाल क़िला। १८,अप्रैल १६४९ में शाहजहाँ बादशाह ने सर्वप्रथम बड़े वैभव से अपना दरबार यहीं स्थापित किया।

बहादूर शाह जाफर

ूरसिंहासन कोमल रेशमी ज़रियों और तथा चाँदी के
गों से भरा हुआ बहुत ही सुंदर दीखता था। देखनेवालों
आँखें चौंधिया जाती थीं। शायर फ़िरदौसी ने कहा था
इस ज़मी पर कहीं जन्नत है तो वह यही है, यही है,
ी है। उसकी इस शायरी को शाहजहाँ के बेटे दारा ने
ूरसिंहासन पर सुवर्ण अक्षरों में जड़वाया।
रंगजेब के बाद जो भी मुगल बादशाह आये, उनके
ए यह जन्नत दोज़ख में बदल गयी। मुगल शासन के
न के साथ-साथ यह क़िला भी आक्रामक नादिरशाह,
हमद शाह अब्दाली आदियों के वश में आ गया।
५७-५८ के बीच सिपाहियों ने ईस्टइंडिया कंपनी के ख़िलाफ
द्रोह किया। उन्होंने वृद्ध बहादूर शाह जाफर को अपना राजा घोषित किया। तब रक्तपात हुआ। विद्रोह दबा
या गया। ब्रिटिशों ने उसी क़िले में बहादूर शाह पर सुनवाई की। उसे मुज़रिम क़रार करके देश- बहिष्कार
सजा सुनायी और बर्मा भेज दिया।

१५, अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र बना। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद ब्रिटिश का झंडा यूनियन जाक उतारा गया और पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हमारे त्रिवर्ण राष्ट्रीय झंडे को फहराया। यह झंडा लाल क़िले पर फहराया गया। यों इतिहास का एक अध्याय समाप्त हुआ।

लाल किला, दिल्ली।

# ज्ञानी सिद्ध

युवक नंद पढ़ा- लिखा था। उसने बहुत कोशिशें कीं पर उसे कोई नौकरी नही मिली। उसके माँ-बाप चाहते थे कि वह कमाये। उसके भाई-भाभी आदि उसकी बेकारी पर उसकी दिल्लगी उड़ा रहे थे। वे सब कहा करते थे "पढ़-लिखने से क्या फ़ायदा। तुम तो एकदम असमर्थ हो। अब घर में ही बैठकर पेट भर खाते रहो।" उसको देखते मात्र से वे चिढ़ते थे। उसके साथ बैठने भी वे तैयार नहीं थे। उसकी असमर्थता पर उसकी हँसी उड़ा रहे थे। इस स्थिति में उसके साथ प्यार से बात करनेवाली एक मात्र राधा थी।

राधा का पिता धनवान था। राधा उसकी एकलौती बेटी थी।

नंद ने सोचा कि राधा से शादी करने पर अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार सकूँगा। उसने एक दिन राधा से शादी का ज़िक्र भी किया। वह हँस पड़ी और बोली "हाँ, मैं तुम्हें चाहती अवश्य हूँ, पर तुमसे शादी नहीं करूँगी। मैं उसीसे शादी करूँगी, जो मेरी अमीरी पर ना रीझे। उसीसे मैं शादी करूँगी, जो खूब कमाये; जो अपने पैरों पर खड़ा हो सके। तुम आदमी अच्छे हो, पर हो असमर्थ।"

राधा की इन बातों से नंद प्रेरित नहीं हुआ उल्टे उसमें जीवन के प्रति विरक्ति पैदा हो गयी। उसने आत्महत्या करने की ठानी। वह जंगल में गया और एक पेड में रस्सी लटका दी। फंदा अपने गले में डालने के पहले वह भगवान की प्रार्थना करने लगा।

उस तरफ से गुज़रते हुए सिद्ध नामक एक सज्जन नें नदं को आत्महत्या करने से रोका। उससे उसकी सारी कहानी सुनी। मुस्कुराता हुआ वह बोला "इस जंगल में साधु और क्रूर जंतु दोनों हैं। साधु जंतु क्रूर जंतुओं से डरते हैं। क्रूर जंतुओं को शिकारियों। का भय है। सब जंतु प्रक्रति के वैपरीत्यो से डरते हैं।

प्रफुल्ल चंद्र

आग भभक उठे, बाढ़ आ जाए, बीमारियाँ फैल जाएँ तो उनकी रक्षा नहीं हो पाती। उनका अंत निश्चित है। हर पल वे अपनी जान को ख़तरों से घिरे पाते हैं, फिर भी उनमें उत्साह होता है, आनंद होता है। खाना और सोना, ये ही दो काम हैं उनके। फिर भी वे बहुत ही चुस्त दीखते हैं। तुम तो मानव हो। तुममें सोचने की अद्भुत शक्ति है। तुम्हें जीवन में बहुत कुछ करना है। किन्तु तुम तो निरुत्साहित व निराश होकर इस छोटी-सी उम्र में ही जीवन से मुक्ति चाह रहे हो। आत्महत्या करने का तुम्हारा यह विचार सचमुच हास्यास्पद तथा लज्जाजनक है''।

नंद लज्जित होता हुआ बोला'' आप ज्ञानी लग रहे हैं। मेरी असमर्थता को आपने भली-भाँति पहचाना। मेरी समझ में नही आ रहा है कि पैसे कमाऊँ कैसे?''

सिद्ध ने कहा ''पैसै कमाने के हज़ारों मार्ग है। दूसरों पर निर्भर रहनेवालों का आदर कभी नही होता। जो मिलेगा ,उसी से संतृप्त रहो। अपना स्वतंत्र जीवन बिताओ। तभी तुम्हारा आदर होगा। मानवों के बीच में रह नही पाते हो तो इस जंगल में ही रहो। यहाँ कंद-मूल, फल हैं। इन्हें खाते हुए अपना पेट भर सकते हो। किन्तु यहाँ हर क्षण प्राण सँकट में है। मनुष्य ने, मनुष्य के लिए कितनी ही सुविधाएँ जुटायीं। कितने ही साधन प्रदान किये, यह जानना हो तो जंगल में रहने पर नहीं जान पाओगे। लोगों के साथ रहने पर ही उनकी महानता तथा उनकी सृजन-शक्ति को जान पाओगे। तुम यहाँ रहना नही चाहते हो मेरे साथ शहर आओ। वहाँ कोई रास्ता निकल आयेगा।'' ''नंद जंगल में रहना नहीं चाहता था। वह सिद्ध के साथ शहर निकल पड़ा। रास्ते में गाँव की एक सराय में दोनों ठहरे।

आधी रात को एक चोर सिद्ध का धन लूटकर भाग रहा था। नंद ने उसे देख लिया। सराय में ठहरे सबने चोर को खूब पीटना चाहा। सिद्ध ने उन्हें रोका और कहा ''पहले यह जान लें कि इसने चोरी क्यों की ?''

चोर ने अपनी तक़लीफ़ों का चिट्ठा खोला। उसकी तकलीफों का ब्योरा सुनकर सब के दिलों में उसके प्रति दया पैदा हो गयी। कुछ लोग तो रो पड़े।

यह देखते हुए सिद्ध हँस पड़ा और कहा "आँसुओं से पेट नही भरता। इसको आप लोगो की सहानुभूति नही, पैसे चाहिये। हमारे बीच में अगर कोई चोर बन जाए तो, ग़लती उसकी नही, बल्कि हमारी है।"

वहाँ उपस्थित सब लोगों पर सिद्ध की बातों का असर हुआ। उन्होंने तुरंत चोर को पैसे दिये। सौ अशर्फ़ियाँ जमा हो गयीं। चोर जब उन अशर्फियों को लेकर खुशी-खुशी जाने लगा तो सिद्ध ने उसे रोका और पूछा "एक चोर बनकर तुमने इस सराय में प्रवेश किया। भिखारी बनकर लौट रहे हो। तुम्हें अपनी इस हालत पर शरम नहीं आती?"

चोर ने कहा "आप ही कहिये, मैं कर भी क्या सकता हूँ।" सिद्ध ने कहा "बताओ, तुम किस गाँव के हो। वहाँ जाकर तुम्हारे लोगों की ज़रूरतें मैं पूरी करूँगा।"

तब चोर ने सिद्ध के पैर पकड़ लिये और कहने लगा "महाराज, इस संसार में मेरे अपने कोई नही हैं। एकदम अकेला हूँ। चोरी करते हुए दिन गुजार रहा हुँ। ग़लती हो गयी। भविष्य में कभी भी चोरी नही करूँगा। यहाँ तो मुझे कोई भी काम नहीं देगा। किसी और गाँव में चला जाऊँगा और इन सौ अशर्फ़ियों से कोई व्यापार करूँगा। नीति के मार्ग पर

चलूंगा।" सिद्ध उसकी बातों पर हँस पड़ा और बोला "इस गाँव में तुम्हें कोई नौकरी नहीं देगा तो तुम्हें क्या नुक़सान पहुँचेगा ? अपने कष्टों की कहानी बढ़ा-चढ़ाकर तुमने हमसे कही और हमें रुला दिया। अर्थ इसका यह हुआ कि तुम अव्वल दर्जे के अभिनेता हो। नाटकों में कोई पात्र अदा करो और कमाओ। चोरी बुरा पेशा है, तो अभिनय आदरणीय पेशा।" यों कहकर साधु ने चोर से धन वापस ले लिया और एक व्यक्ति को दिया।

सिद्ध की कही बात चोर टाल ना सका। सिद्ध और नंद वहाँ से निकल पड़े। रास्ते में नंद ने सिद्ध की अक़्लमंदी की तारीफ़ की। तब सिद्ध ने कहा " कुछ लोग अपनी ज़रुरतों के लिए चोरी करते है। कुछ सुस्त होते है, जो काम करना नहीं चाहते। केवल दान-गुण का होना पर्याप्त नहीं है, उसका सदुपयोग भी आवश्यक है और यह हमारी जिम्मेदारी भी है।"

"आप जैसे ज्ञानी हर गाँव में हों तो कितना अच्छा होगा। इस दुनिया में अपराधी ही नहीं होगें" नंद ने कहा। "ज्ञान सबके भाग्य में बदा नहीं होता। वैसे ही ज्ञानी भी सबों के उपयोग में नहीं आता। इस संसार को ज्ञान से बढ़कर चाहिये धन। उस धन के लिए चोर चोरी करना चाहता था। तुम मरना चाहते थे। शहर पहुँचने के बाद मैं तुम्हें अपने यजमान के पास ले जाऊँगा। उनके पास धन और ज्ञान दोनों भरपूर हैं। मुझ जैसे बहुत-से ज्ञानियों का वे पोषण कर रहे हैं। अवश्य ही कोई मार्ग सुझायेंगे"। सिद्ध ने आश्वासन दिया। यों शहर पहुँचने के पहले नंद ने सिद्ध में और तरह की कई प्रतिभाएँ देखीं। एक जगह पर एक रोगी मरण-शय्या पर पड़ा हुआ था तो उसके बंधु-जन पास बैठे रो रहे थे। वे भगवान से प्रार्थना कर रहे थे। सिद्ध क्रोधित हो बोला "इस रोगी के मुख पर मृत्यु-चिह्न नहीं है। तक्षण किसी वैद्य को बुलाइये" वैद्य के आने पर सिद्ध ने इस रोगी के मुख-लक्षणों को परख कर उससे कहा कि यह रोगी शीघ्र मरनेवाला नहीं है।" "वैद्य हुं, फिर भी

इस विषय को जान नहीं पाया। आप तो अवतार पुरूष लगते हैं। अब इस रोगी को चंगा करना मेरे बायें हाथ का खेल है"। वैद्य ने कहा।

रोगी के रिश्तेदारों ने सिद्ध को धन देना चाहा। सिद्ध ने तब हँसते हुए कहा "मैंने वही कहा, जो मुझे ठीक लगा। मुझे इस बात का आनंद है कि मैं आपके काम आया। मेरी तो यही अभिलाषा है कि मेरा ज्ञान हवा और पानी की तरह सब के उपयोग में आये।" कहकर वह वहाँ से निकल पड़ा। एक और जगह पर सिद्ध ने हीरों को चुनने में एक भाग्यवान की सहायता की। प्रतिफल अस्वीकार किया। आख़िर दोनों शहर पहुँचे। नंद सिद्ध के घर में ही ठहरा।

दूसरे दिन सिद्ध नंद को लेकर अपने यजमान के पास गया। यजमान रेशमी वस्त्र पहना हुआ था। गले में रत्नों का हार था। उसके शरीर से सुगंधि फूट रही थी।

सिद्ध को देखते ही नाराज़ हो यजमान बोला "आपको दो दिनों के पहले यहाँ पहुँचना था। आपके विलंब के कारण मुझे लाखों का नुक़सान हुआ है। एक परदेशी अपनी अत्यावश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हीरों का अपना हार बेचने पर तुला हुआ था। मालूम नहीं हो पाया कि वे हीरे असली है या नक़ली। आप जैसे निपुण के ना होने के कारण मैं निर्णय नहीं ले पाया। किसी और ने उस हार को खरीद लिया। आपका विश्वास करके आपको छुट्टी दी

और इसकी सज़ा मुझे भुगतनी पड़ी। वादे के जो पक्के नहीं होते, उनका कैसे भरोसा करें? उम्र हो गयी, किन्तु क्या लाभ।''

सिद्ध ने यजमान को बार-बार आश्वासन दिया कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा। तब जाकर यजमान शांत हुआ।

तब वहाँ के कर्मचारी एक आदमी को ले आये। उन्होंने कहा ''विश्वासपात्र होने का नाटक करते हुए इसने चोरी करनी चाही और यह पकड़ा गया। यजमान ने आज्ञा दी ''गले में एक तख़्ता लटकाओ और उसपर लिखो कि यह चोर है। इससे पथ्थर तोड़ने के कठिन काम करावो। शाम को गधे पर बिठाकर शहर भर घुमावो। यों छे हफ़्ते करोगे तो चोरी का नाम ही भूल जायेगा।''

यजमान का निर्णय सुनकर ज्ञानी चुप हो गया। यह देखकर नंद अवाक् रह गया। उसे सिद्ध का निर्णय याद आया, जो उसने सराय में चोर के विरूद्ध की थी।

एक और कर्मचारी यजमान के पास आया। उसने अपने बीमार बेटे के इलाज के लिए पैसे माँगे। यजमान ने कहा ''जानते हो, मैने इस नगर में बालाजी का मंदिर क्यों बनाया? तुम जैसे लोगों की सहायता के लिए ही। संपन्न लोगों की सहायता भगवान नहीं करते। दरिद्र भाग्यवान होते हैं। उनका वैद्य भगवान है। जाओ, मंदिर में जाकर भगवान से माँगो, जो माँगना है'' सिद्ध को देखते हुए उसने कहा।

इस बार भी सिद्ध मौन ही रहा। नंद को इस बार और आश्चर्य हुआ।

यजमान ने सिद्ध से अपने शरीर की स्थिति बतायी।अपने आहार के नियम भी सविस्तार बताये। तब वहाँ एक व्यापारी रत्न लेकर आया तो उनको चुनने मे सिद्ध ने यजमान की सहायता की।

जब सब काम ख़तम हो गये,तब सिद्ध ने नंद को दिखाते हुए यजमान से कहा ''आपकी सभा में इसे नौकरी दीजिये। 'ना'ना कहिये।'' यजमान ने यह कहते हुए कि आपकी बात कैसे टाली जा सकती है, नंद को अपने यहाँ नौकरी दी। उसका वेतन होगा हर माह हज़ार

अशर्फियाँ । उसे उसके व्यापार से संबधित हिसाबों का पर्यविक्षण करना होगा ।

दोनों घर लौट पड़े । रास्ते में सिद्ध ने नंद को धन्यवाद दिया । और पूछा "यजमान आपके ज्ञान का क्यों उपयोग नहीं कर रहे हैं ?"

सिद्ध ने कहा " मेरे ही ज्ञान से वे लाखों कमा रहे है ।" "मेरा मतलब हीरे और रत्नों से नहीं है। बाक़ी किसी भी विषय में वे आपकी सलाह नहीं माँग रहे है । त्रुटिपूर्ण निर्णय सुना रहे है, फिर भी आप मौन क्यों रह गये ?" नंद ने पूछा ।

" अगर मैं उनसे कहता भी कि आपका निर्णय तृटिपूर्ण है, वे उसे बदलेंगे नही, उल्टे मुझपर नाराज़ होंगे । मेरे इस मौन से वे संतुष्ट थे, इसीलिए मेरे कहते ही तुम्हें नौकरी दी । अब बात तुम्हारी समझ में आ गयी ना" सिद्ध ने कहा ।

"पहले तो आपपर वे एकदम झल्ला पड़े । इससे क्या आपके आत्माभिमान को धका नहीं लगा?" नंद ने पूछा ।

सिद्ध हँसता हुआ बोला" अज्ञानी के लिए धन ही मुख्य है । धन के लिए कुछ भी किया जा सकता है । अगर मैं अज्ञानी ना होकर ज्ञानी होता तो आत्माभिमान नामक शब्द का कोई अर्थ ही ना होता । आत्म स्वयं प्रकाश है । नित्य नूतन है । उसमें मलिनता नहीं होती । गाली देते हुए देखकर मेरी दृष्टि में वे शिशु लगते है । इसपर मुझे हँसी भी आती है । मुझे वे छोड़ नहीं सकते । मुझसे उनके बहुत काम बनते है । मैं भी उन्हे छोड़ने की स्थिति में नहीं हूँ । उन्हीं के कारण मै सुखी जीवन व्यतीत कर रहा हूँ । अब रही ज्ञान की बात । ज्ञानी जानता है कि मेरी बुद्धि से उन्हें लाभ पहुँचता है। जो सलाह नहीं माँगते, उन्हें सलाह देना निष्फल है"।

नंद के सब संदेह दूर गये । वह सिद्ध का अनुसरण करता हुआ, आवश्यकता पड़ने पर ही अपने ज्ञान को उपयोग में लाने लगा। उसने वहाँ कभी भी अपना आधिक्य नहीं दिखाया, जहाँ उसकी बात नहीं चलती हो । यों जीवन बिताते हुए उसने अच्छा नाम भी कमाया ।

## 'चन्दामामा' की ख़बरें

### सजती हुई 'ओल्ड लेडी' (बूढ़ी औरत)

पारिस नगर में ईफिल टवर के निर्मित हुए १०६ साल पूरे होनेवाले हैं। स्थानीय लोग उसे बड़े प्यार से 'ओल्ड लेड़ी' कहकर पुकारते है। इसपर रंग पोतने का काम बहुत जोर शोर से चल रहा है। फ्रांस की क्रांति के सौ साल की समाप्ति के अवसर पर इस टवर का निर्माण कार्य १८८७ में गस्टेव अलक्ज़ाडि ईफिल ने प्रारंभ किया। तब से सात-आठ सालों में एक बार इस पर रंग पोतने का काम किया जा रहा है। सत्रहवीं बार इस पर रंग पोता जा रहा है। इसकी ऊँचाई १,०५० फुट (३२० मी) है। इस ऊँचे टवर पर चढ़कर रंग पोतने जो आगे आये, उन्हें गस्टेव ईफिल ने अधिक वेतन देकर प्रोत्साहित किया। अब भी इस काम में जो लगे हुए है, उन्हें अधिकाधिक मज़दूरी दी जाती है। अंदाज़ा है कि पंद्रह-बीस महीनों में रंग पोतने का यह काम समाप्त हो जायेगा। पचास टनों का पैंट इसमें लगता है। सीन के तटपर निर्मित इस टवर को देखने हर साल ७,०००,००० पर्यटक आते हैं। पारिस नगर का यह प्रधान आकर्षण है। १८८९ से इसे पर्यटक देखते आ रहे है।

### प्रथम महिला अंतरिक्ष पैलेट

अमेरेका की व्योमनौका 'डिस्कवरी' फ़रवरी, तीसरी तारीख़ को अंतरिक्ष में उड़ी और सप्ताह भर के भ्रमण के बाद विजयपूर्वक भूमि पर लौटी। इसे चलानेवाली थी एक महिला। इनका नाम है एलिन कालिन्स। इनकी उम्र है ३२ वर्ष। बाल्य-काल से ही वह अंतरिक्ष में यात्रा करने की इच्छा रखती थी। वह इच्छा अब पूरी हुई। उनसे चलायी गयी व्योमनौका का, अंतरिक्ष के क्षेत्र में परिभ्रमण करती हुई रूसी व्योमप्रयोगशाला 'मीर' के निकट जाना बड़ी ही विशिष्ट बात मानी जाती है। वैज्ञानिक अब इस प्रयत्न में हैं कि चार महीनों में पुनः व्योमनौका अंतरिक्ष में भेजी जाए और 'मीर' से जुड़ जाए।

### 'तृष्णा' में महिला नाविक

सेकंड लेफ्टिनेंट दीपा नीता दास को एक और साहसी वनिता कह सकते हैं। वे भारतीय सेना में शामिल हुई। सात साल बाद बंबई से 'तृष्णा' नामक एक नाव जो सिंगापूर गयी, दीपा नीता दास ने भी एक नाविक बनकर उसमें यात्रा की। उस नाव को चलानेवाले बारह नाविकों में से ये ही एकमात्र महिला थी। पिछले फ़रवरी, १५ को यह नाव 'तृष्णा' बंबई से निकली और मालद्वीप, श्रीलंका, अंडमान्स, थायलाण्ड, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापूर से होती हुई १२,००० कि. मी. की यात्रा तय की और सुरक्षित बंबई लौट आयी।

# महाभारत

पाँडव अपनी माँ के साथ वारणावत जाने सन्नद्ध हो गये। उनकी यात्रा के लिए घोड़े सजाये गये। रथों का प्रबंध हुआ। उन्होंने भीष्म, धृतराष्ट्र, विदुर, द्रोण, कृपाचार्य, वाह्लिक, सोमदत्त जैसे बड़ों को विनयपूर्वक प्रणाम किया, उनके आशीर्वाद पाये और दीन वदन लिये हस्तिनापुरी से निकल पड़े।

कुछ साहसी ब्राह्मण भी उनके साथ-साथ निकले। वे परस्पर कहने लगे "यह अंधा राजा कितना बड़ा पापी है। बेचारे पाँडवों ने किसी को हानि नहीं पहुँचायी। उसके पिता से शासित देश क्या उनका नहीं है? धर्मराज को भी वारणावत जाने से इनकार करना था। जब इतना अन्याय यहाँ हो रहा है, तब भला इस नगर में हम क्यों रहें? जहाँ धर्मराज जायेंगे, वहीं हम भी जायेंगे। वहीं रहेंगे।" वे ज़ोर ज़ोर से बोलने लगे।

धर्मराज ने उनकी ये बातें सुनी और उनसे कहा "महोदय, धृतराष्ट्र वयोवृद्ध हैं। उन्हीं के संरक्षण में हम रह रहे हैं। वे हमें जहाँ जाने के लिए कहेंगे, वहाँ हम जायेंगे। यह हमारा परम कर्तव्य है। आप हमारी भलाई चाहते हैं, इसके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। कृपया हमें आशीर्वाद दीजिये और हस्तिनापूर लौट जाइये।" यों कहकर धर्मराज ने उन्हें वापस भेज दिया।

बिदा करने जो आये थे, विदुर के अलावा सब लौट गये। विदूर धर्मराज के साथ थोड़ी दूर और गया और एकांत में उससे कहा "तुम लोगों के निवास के लिए लाख से बना एक घर तैयार किया गया है। शत्रुओं का एक आदमी भी तुम लोगों के साथ इस घर में

**लाख-गृह-दहन**

रहेगा। उस लाख के घर को जला दिया जायेगा। किन्तु तुम लोग घबराओ मत, निडर रहो। चौकन्ना रहो और अपने प्राणों की रक्षा करो। लाख के घर से अरण्य की ओर जाने के लिए एक सुरंग खोदा जायेगा। अरण्य में पहुँचने के बाद नक्षत्रों के आधार पर दिशा का पता लगाओ और अपने मार्ग पर बढ़ते चलो। याद रखना, किसी भी स्थिति में लाख से बने उस घर में रहने से तिरस्कार मत करना।'' यह कहकर विदुर भी लौट पड़ा।

तब कुन्ती ने धर्मराज से पूछा ''पुत्र, विदुर ने तुमसे कोई रहस्य बताया है। क्या हम भी जान सकते हैं कि वह रहस्य क्या है?''

धर्मराज ने अपनी माँ और भाइयों से कहा ''विदुरश्री ने हमें चेतावनी दी है कि हम अग्नि से युक्ति से अपनी रक्षा करें। जागरूक रहें और जीवन-यापन करें तथा राज्य को स्वाधीन करें।''

फाल्गुण शुद्ध अष्टमी रोहिणी नक्षत्र के दिन पाँडव वारणावत पहुँचे। उनके आगमन का समाचार सबको विदित था। भाट, ब्राह्मण आदि विविध वाद्यों के साथ उनका स्वागत-सत्कार करने आये। पूरा नगर तोरणों, रंगोलियों तथा पुष्पमालाओं से अलंकृत था।

नगर में प्रवेश करने के बाद पाँडव ब्राह्मण, वैश्य तथा शूद्रों के घरों में गये, उनमें भेंटे बाँटीं। पुरोचन उन्हें उस घर में ले गया, जहाँ उनके भोजन का प्रबंध हुआ। दस दिन वहीं रहने के बाद पुरोचन ने उनसे कहा, '' महोदय, आप ही के लिए नये भवन का निर्माण हुआ है। अब आप उस घर में रह सकते हैं।'' उसने उस भयन की अद्वितीयता का वर्णन किया।

धर्मराज को उस भवन के रहस्य के संबंध में पहले से ही मालूम था। वह कौरवों के षड़यंत्र से भली-भांति परिचित था, इसलिए धर्मराज ने व्यवहार ऐसा किया, मानों उसकी सुंदरता तथा श्रेष्ठता की दाद दे रहा हो। माँ और भाइयों के साथ धर्मराज ने घर में प्रवेश किया।

तदनंतर धर्मराज ने भीम से विदुर की बतायी सब बातें बतायीं और कहा ''भीमसेन,

इस घर के गंध से ही मालूम हो जाता है कि जलाने भर की देरी है, दग्ध हो जायेगा।

इस पुरोचन ने हमें जला डालने के लिए ही यह प्रबंध किया है, इसलिए हमें यहाँ बड़ी सावधानी से रहना होगा।"

तब भीम ने कहा " तो हम इस घर में रहेंगे ही नहीं। पहले जिस घर में थे, वहीं जाकर बसेंगे।"

"ऐसा करना बड़ी भूल होगी। हमें इस घर को जलाकर मार नहीं सका तो यह पुरोचन हमारे अंत का कोई और मार्ग ढूँढेगा। अब एक ही उपाय है। हमें उसे और कौरवों को भ्रम में रखना होगा कि इस घर के साथ-साथ हम भी मरकर राख हो गये। यहाँ से बचकर निकलने और कहीं दूर चले जाने के लिये जंगलों के रास्तों से हमें बखूबी परिचित होना होगा। इसलिए आखेट के बहाने हम जंगलों के मार्गों का अवलोकन करेंगे।" धर्मराज ने भीमसेन को सविस्तार अपनी योजना बतायी।

उसी प्रकार पाँडव पूरा दिन जंगलों में शिकार किया करते थे, रातों को सावधानी से रहने और बरतने लगे।

इस बीच विदुर ने सुरंग खोदने में निपुण एक व्यक्ति को बुलवाया और उसे सविस्तार समझाया। इस रहस्य को अपने ही तक सीमित रखने को कहा। उसने उसे कुछ संकेत भी बताये, जिनसे पाँडवों को विश्वास हो जाए कि यह विदुर का ही भेजा हुआ व्यक्ति है। वह विदुर का आदेश पाकर वारणावत पहुँचा और पाँडवों से मिला।
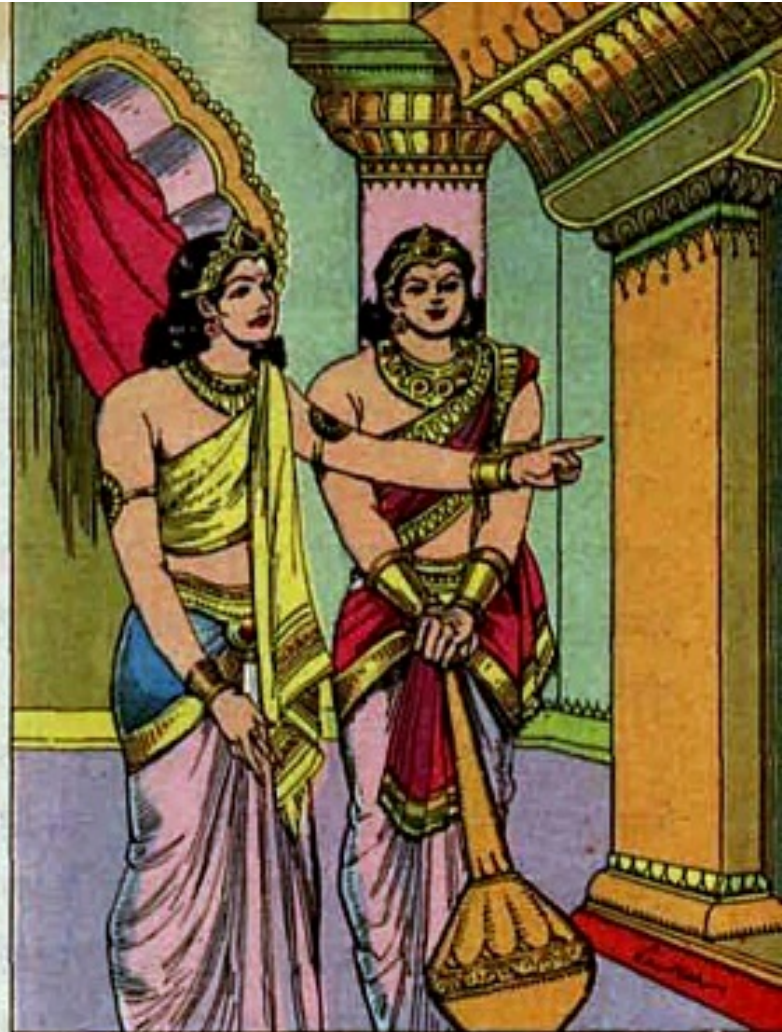
उसने पाँडवों से कहा "यह पुरोचन दुष्ट कौरवों का भेजा हुआ आदमी है। उन्हीं के आदेशों के अनुसार इसने लाख का घर बनाया है। कृष्ण चतुर्दशी की रात को इस घर में आग लगानेवाली है। विदुरश्री ने मुझे आदेश दिया है कि उस रात को यहाँ से बचने के लिए एक सुरंग खोदूँ, जहाँ से भागकर आप दूर जा सकें और किसी को कानों कान खबर भी ना हो। सुरंग खोदने के लिए हस्तिनापुर से आया हुआ निपुण मैं ही हूँ।"

उस व्यक्ति ने घर के बीच में एक बिल खोदा और उसके द्वार को बहुत ही निपुणता

से ढक दिया। उसने पाँडवों को वह बिल दिखाया।

पाँडवों ने बड़ी सावधानी बरती। उन्होंने ऐसा नाटक किया मानों उन्हें पुरोचन के बारे में किसी प्रकार का संदेह ही नहीं है और घर के दहन के षड्यंत्र से वे बिल्कुल अपरिचित हैं। इससे पुरोचन ने उनका विश्वास किया और सोचा कि अब मैं अपना काम सुगमता से निपटा पाऊँगा।

कृष्ण चतुर्दशी का दिवस आया। उस दिन कुन्ती ने पुर के ब्राह्मणों और उनकी धर्मपत्नियों को भोज दिया। पुरोचन ने वन की एक स्त्री और उनके पाँच पुत्रों को पाँडवों की सेवा के लिए नियुक्त किया था। वे वन से फल-फूल ले आते और पाँडवों को खिलाते थे। चूंकि उस दिन उत्सव था, इसलिए उस स्त्रीने तथा उनके पाँचों पुत्रों ने बहुत ताड़ी पी। वे जल्दी ही उस रात को सो गये।

आधी रात को भीम पुरोचन के कमरे पर गया। वह सो रहा था। उसने उस कमरे के दरवाजे में आग लगायी। माँ और भाइयों को सुरंग के मार्ग से भेज दिया और घर के चारों ओर आग लगा दी। स्वयं बिल में प्रवेश करके सुरंग के मार्ग में गया और उस निपुण को अपने क्षेम का समाचार सुनाया। यों सब सुरंग-मार्ग से जंगल में पहुँचे।

थकी कुन्ती चल नहीं पा रही थी। भीम ने माँ को अपने कंधों पर बिठा लिया। दूसरों को भी सहारा देकर उन्हें ले जाना पड़ा। इस प्रकार से वे उस घने अंधकार में गंगा नदी के तट पर पहुँचे।
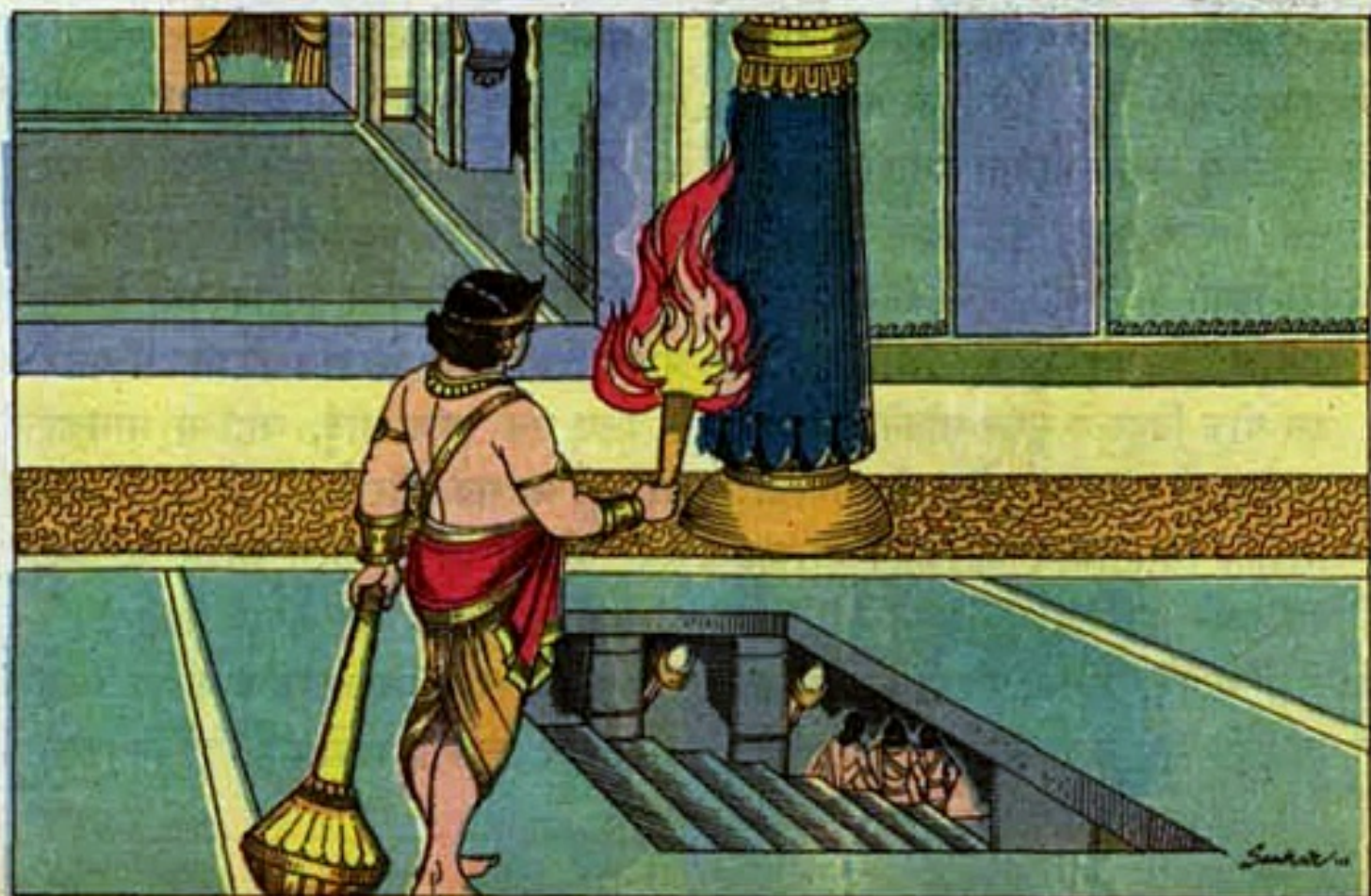
गंगा पार करने के लिए वहाँ एक नाव तैयार थी। इस नाव का भी प्रबंध विदुर ने ही किया था।

नाव खेनेवाले खेवैये की बातों से भी जब यह प्रमाणित हो गया कि वह विदुर का ही भेजा हुआ आदमी है, तो वे उसमें बैठे और गंगा नदी पार की।

पाँडवों को उतारकर विदुर को यह समाचार सुनाने वह खेवैया चला गया।

अब भी रात बाकी थी। नक्षत्रों के प्रकाश में पाँडवों को दिशा दीख रही थी। वे दक्षिण की ओर पैदल जाने लगे। थोड़ी दूर और जाने के बाद भीम के अलावा कोई और एक क़दम भी आगे बढ़ा नहीं पा रहा था। रात भर नींद नहीं थी। कंटीले अरण्य-मार्ग से होते हुए आना पड़ा था। वे सब बैठ गये तो भीम ने पाँचों को अपने कंधों पर बिठा लिया और चलता रहा। एक चट्टान पर उन्हें बिठाया और थककर उनके बगल ही बैठ गया। कुन्ती ने तब भीम से कहा, "पुत्र, बड़ी प्यास लगी है। लगता है, प्राण-पखेरू उड़ जायेंगे।"

भीम ने फिर से सब को उठाकर कंधों पर बिठा लिया और फिर उन्हें एक बरगद के वृक्ष के नीचे बिठाया। उसने कहा "आप सब यहाँ लेटिये। मैं आप सब के लिए जल लाऊँगा।" यों कहकर वह वहाँ से निकल पड़ा।

थोड़ी दूर जाने के बाद उसे जल-पक्षियों का कलरव सुनायी पड़ा। उस दिशा में जाने पर उसे एक सरोवर दिखायी पड़ा। भीम

ने स्नान किया और जल लेकर उस वृक्ष के पास आया। उसने देखा कि पांचों गाढ़ी निद्रा में हैं।

भीम ने सोचा कि इस आपत्तिकाल में भी ये घोड़े बेचकर सो रहे हैं। बहुत ही थक गये होंगे, इसलिए जगाना नहीं चाहा। उनके उठ जाने की प्रतीक्षा करता हुआ वहीं बैठ गया।

वारणावत में सबको मालूम हो गया कि पाँडवों का अतिथि-गृह जलकर राख हो गया है। भीड़ जमा हो गयी, अब भी आग की लपटें उन्हें दिखायी दे रही थीं। उस आग को बुझाने का बहाना बनाते हुए सुरंग खोदनेवाले ने बड़ी निपुणता से उस बिल को ढक दिया। पुरोचन, वन स्त्री तथा उसके पाँचों पुत्रों के शव पहचाने नहीं जा रहे थे। लोगो ने समझा कि कुन्ती, उसके पाँचों पुत्र तथा पुरोचन उस आग में जल गये।

हस्तिनापुर में भी यह बात मालूम हुई। कुन्ती के साथ पाँचों पाँडवों की मौत का समाचार पाकर धृतराष्ट्र बेहोश हो गया।

विदुर ने भी कपट आँसू बहाये, जिससे किसी को भी रत्ती भर भी संदेह ना हो।

कौरव तो बहुत ही प्रसन्न थे। सब भाई अपने अग्रज दुर्योधन की प्रशंसा के पुल बाँधने लग गये। अपनी योजना की सफलता पर दुर्योधन फूला नही समा रहा था। उसे लगा कि उसका राजा होना अब निश्चित है। लेकिन कौरव बाहर से शोक का ही प्रदर्शन कर रहे थे। वे तो ज़ोर-ज़ोर से रोते और कहते जाते कि पाँडव जैसे भाइयों को खोकर हमने सब कुछ खो दिया। उनकी सेवाओं में रत रहकर हम अपने जीवन को चरितार्थ करना चाहते थे, किन्तु हम वंचित रह गये। वे धर्मराज के सद्‌गुणों का, अर्जुन की शूरता का, भीम के पराक्रम की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा करने लगे और उनका नाम ले लेकर रोने लगे। विदुर को छोड़कर कोई भी यह जानता नहीं था कि यह सब नाटक है, दिखावा है।

पाँडव जिस वन में मस्त सो रहे थे, वहाँ हिडिंब नामक एक राक्षस था। वह काले रंग का था। बहुत ही बलिष्ठ उसका देह था। लटकता हुआ उसका पेट बहुत ही विशाल था।

नुकीली लाल मूँछें थीं। वह था नर भक्षक हिडिंब। वह बहुत ही भूखा था। भोजन-सामग्री के लिए वह जंगल भर भटकता रहा। आखिर वह एक पेड़ पर जा बैठा। चारों ओर उसने अपनी दृष्टि फैलायी। उसने बरगद के पेड़ के नीचे लेटे कुछ मनुष्यों को देखा। हिडिंब ने अपनी बहन हिडिंबा को बुलाया और कहा "बहन, दीर्घ काल के बाद मनुष्यों का माँस खाने को मिला है। तुरंत जाओ और उस पेड़ के नीचे जो सोये हुए हैं, उन्हें मारकर ले आओ, हम पेट भर खायेंगे और उल्लास से नृत्य करेंगे।"

हिडिंबा उस पेड़ के पास आयी, जहाँ पांडव सोये हुये थे। भीम पहरा देता हुआ बैठा हुआ था। हिडिंबा को भीम बहुत ही सुंदर लगा। उसके सुडौल शरीर को देखकर वह उसपर मुग्ध हो गयी। उसके गंभीर मुखारविंद को वह देखती ही रह गयी। उसे लगा कि ऐसे सुंदर व सुदृढ़ मनुष्य के सांगत्य से मेरा जीवन धन्य हो जायेगा। ऐसे मनुष्य की पत्नी बनने से बढ़कर क्या और भाग्य हो सकता है? उसमें उसके प्रति इच्छा जगी। वह उसे चाहने लगी। उसने सोचा, इन मनुष्यों को मारने के बजाय इन्हें जीवित रखूँ तो मुझे इस कामदेव का प्यार मिलेगा और दिन आराम से कटेंगे।

उसने सुंदर रूप धारण किया। चमकीले वस्त्र पहने और मुस्कुराती हुई भीम की तरफ़ बड़ी आशा से देखती रही। समीप आकर उसने भीम से कहा "सज्जन, तुम कौन हो? ये सोनेवाले कौन हैं? यहाँ क्यों आये हो? सुकुमारी यह बुढ़िया कौन है? तुम्हें मालूम नहीं कि इस जंगल में हिडिंब नामक मेरा भाई रहता है। वह महाबली राक्षस है; अति क्रूर है। आप सबको मारकर ले आने की आज्ञा दी है मेरे भाई ने। वह आप सबको मारकर खा जानेवाला है। किन्तु तुम्हारी सुंदरता पर मै मुग्ध हो गयी हूँ। इसलिए तुम्हें मारने की इच्छा नहीं होती। मेरी इच्छा की पूर्ति करोगे तो मैं तुम सबको काम गमन द्वारा सुरक्षित प्रदेश में पहुँचाऊँगी। वहाँ हम दोनों और शेष ये भी सुख से निरातंक रह सकते हैं।"

(सशेष)

# इमली का पेड़

इसी शीर्षक के अंतर्गत हमने पिछली बार एक पुरानी कहानी के द्वारा बताया था कि इमली के पेड़ की छाया और हवा स्वास्थ्य के लिए ख़राब है। लेकिन इसके बिलकुल विपरीत ही इमली के पेड़ के संबध में एक और कहानी प्रचलित है। कुछ सौ सालों के पहले बंगाल के सुप्रसिद्ध भक्त व धर्म-प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु बृंदावन की यात्रा पर गये हुए थे। बृंदावन पहुँचते ही वे एक इमली के बड़े पेड़ के नीचे बैठ गये और अपना प्रथम प्रवचन दिया। भक्तों का विश्वास है कि श्रीकृष्ण समीप ही के प्रदेशों में गायें चराया करते थे। उस स्थल का नाम पड़ा 'तैंतुल तुझा' (इमली के पेड़ के तले)। बंगाली में इमली को कहते हैं 'तिंतिल'। चैतन्य महाप्रभु वहीं पर रह गये, इसलिए उसे पेड़ को पवित्र माना गया। बताया जाता है कि यह पेड़ अब भी जीवित है। वैसे तो इमली के पेड़ का जीवन-काल लंबा है।

हिन्दी में इसे 'इमली' या 'अंब्ली' कहते हैं। मराठी में 'अम्ली' तमिल और मलयालम में 'पुलि' तथा तेलुगु में 'चिंता' कहते हैं।

इमली के पत्ते छोटे होते है पर हैं मोटे। ये कोमल अवस्था में पीले और हरे रंग में होते है, लेकिन धीरे-धीरे गाढ़े हरे रंग में परिवर्तित होते हैं। पीले, हरे रंग के कोमल लाल फूल गुच्छों में फूलते हैं। फल लंबे और टेढ़े होते है। हर फल में तीन से लेकर दस बीज तक होते हैं। बीजों के चारों ओर खट्टा गूदा होता हैं। कुछ फल मीठे भी होते हैं। फल के फलने के बाद गूदे के चारों ओर एक परत-सी बन जाती है। इमली का उपयोग तरकारियों तथा मसालेदार पेय में अधिक होता है। इमली के पत्तों, बीजों तथा गूदो में औषधियों के गुण भी मौजूद हैं।

इमली की लकड़ी सुदृढ़ होती है, इसलिए इसे गाड़ी के पहियों तथा खूंटों को बनाने के काम में लाया जाता है। छाँव के लिए सड़क के दोनों ओर इमली के बीज बोये जाते हैं।

## हमारे देश के ऋषि : १

# वसिष्ठ

यह तो निर्विवाद विषय है कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा साहित्य को रूप-सज्जा देनेवाले सनातन् ऋषि ही थे। ज्ञान-उपार्जन के लिए इन ऋषि महात्माओं ने अपना जीवन अर्पित किया । पर्याप्त श्रम के उपरांत अर्जित अपने ज्ञान को ये अपने श्रद्धालु तथा सुयोग्य शिष्यों के सुपुर्द करते थे । यों ऋषि हमारे आदि गुरु थे। वे केवल राजकुमारों को ही नहीं बल्कि आश्रित दरिद्रों को भी ज्ञान की शिक्षा देते थे। शिष्य संपन्न हों अथवा दरिद्र, गुरुकुल में ही रहकर विद्याभ्यास करते थे।

प्राचीन कवि वाल्मीकि, व्यास आदि भी ऋषि ही थे। हमारे प्राचीन अग्रगण्य ऋषियों में से वसिष्ठ भी थे। उन्होंने श्रेष्ठ ज्ञानार्जन किया और तद्द्वारा अनेकों अद्भुत शक्तियाँ पायीं। किन्तु उनका उपयोग साधारण स्थिति में कभी भी करते नहीं थे।

विश्वामित्र नामक एक बड़ा राजा आखेट के लिए जंगल में आया। थोड़ी देर के बाद वह थक गया और विश्राम करने वसिष्ठ मुनि के आश्रम में आया। विश्वामित्र यहां अपने सेनाधिपतियों, अंगरक्षकों तथा बृहत परिवार के साथ आया था। वसिष्ठ ने उनका सादर स्वागत किया।

अपने परिवार सहित समीप ही के नदी में स्नान करके विश्वामित्र लौटा। तब तक वसिष्ठ ने सुरुचिकर भोजन का प्रबंध किया। विश्वामित्र उस प्रबंध को देखकर चकित रह गया और वसिष्ठ से पूछा "इस अरण्य में इतनी कम अवधि में ये अनगिनत पकवान कैसे बन पाये? यह असंभव कार्य कैसे संभव हो पाया?"

वसिष्ठ ने नम्रता से कहा "मेरे पास कामधेनु गाय है। मैं जो चाहता हूँ तक्षण ही वह देती है।"

विश्वामित्र भोजन करता तो रहा, किन्तु उसका पूरा ध्यान उस कामधेनु पर केन्द्रित था। उसने उसे अपनाने का निश्चय किया। निकलते समय उसने वसिष्ठ से अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा "वह कामधेनु मुझे भेंट में दीजिये।"

वसिष्ठ ने उसकी इच्छा ठुकरायी और कहा "कामधेनु तो देवांश है। अन्य किसी को दान में दी नहीं जा सकती।"

विश्वामित्र बहुत ही क्रोधित हुआ। कामधेनु को जबरदस्ती ले जाने की उसने ठानी। प्रयत्न भी किये, किन्तु उन प्रयत्नों में वह असफल ही रहा। कामधेनु से सहस्रों सैनिक उत्पन्न होते गये और उन्होंने विश्वामित्र व उसकी सेना को भगाया। इस घटना से विश्वामित्र जान गया कि दैहिक बल से तपोबल उन्नत है। उसने राज्य को त्यजा और ब्रह्मर्षि बनने घोर तपस्या करने लगा।

किन्तु वसिष्ठ के प्रति उसमें प्रतिशोध तथा द्वेष की भावना बनी ही रही। वसिष्ठ ने उसे ब्रह्मर्षि कहकर पुकारने से इन्कार भी कर दिया, जिससे उसका क्रोध और बढ़ गया। उन्हें अपना शत्रु मानने लगा। विश्वामित्र की ये मनोभावनाएँ इस सत्य को निर्धारित करती हैं कि मानव को अपने स्वभाव पर विजय पाना कोई सुलभ बात नहीं है। कुछ बातों में मानव बड़े विवेक तथा उदारता से काम लेता है, किन्तु कुछ बातों में वह नीच-सा व्यवहार करता है। पशु की तरह पेश आता है। विश्वामित्र का वसिष्ठ के प्रति दिखाया गया यह रुख इसका प्रमाण है।

विश्वामित्र वसिष्ठ को मारने का संकल्प लेकर एक दिन छिपे-छिपे उसके कुटीर के समीप आया तो उसने वसिष्ठ व उसकी पत्नी की बातें सुनीं।

"आप अगर विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि कहकर संबोधित करेगें तो वे आपको शत्रु मानना छोड़ देंगे, प्रतिशोध की भावना भुला देंगे और आपको सतायेंगे नहीं। आप उन्हेंक्योंब्रह्मर्षि नहीं कहते?" पत्नी ने पूछा।

"विश्वामित्र ने कठोर तपस्या की। फलस्वरूप बहुत-कुछ साधा भी। किन्तु ब्रह्मर्षि बनने के लिए कुछ और गुणों को उन्हें अपनाना होगा। अगर मैं अब उन्हें ब्रह्मर्षि कहकर पुकारूँ, तो हो सकता है, उस अहंकार में वे अपनी तपस्या, श्रम तथा आग्रह छोड़ दें। इसीलिए मैं जान-बूझकर ही उन्हें महर्षि नही कहता।" यों वसिष्ठ ने कारण का विशदीकरण किया।

इस संवाद को सुनने पर विश्वामित्र में आमूल परिवर्तन हुआ। वसिष्ठ से क्षमा-भिक्षा माँगी।

वसिष्ठ की धर्मपत्नी अरुंधती भी तपोसंपन्न थीं। देह त्यजने के बाद पति-पत्नी नक्षत्र-लोक में लीन हो गये। आकाश में दिखायी देनेवाले सप्तऋषिमंडल के सात नक्षत्रों में से एक नक्षत्र का नाम है, वसिष्ठ। उसी नक्षत्र के समीप ही के एक नक्षत्र का नाम है, अरुंधती।

# क्या तुम जानते हो?

१. रूस में राजाओं तथा रानियों को किस नाम से पुकारते थे?
२. १९४२, अगस्त, ९ का दिन हमारे देश के इतिहास में क्यों प्रमुख दिन है?
३. सूयज नहर कब खोली गयी। वह किन दो समुद्रों को मिलाती है?
४. हमारे देश में पहले-पहल किन दो रेल्वे स्टेशनों के बीच रेल्वे लैन बनायी गयी?
५. द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान 'याक्सि' के नाम से एकत्रित तीन देश कौन -से थे?
६. हमारे देश में बारह सालों में एक बार मनाया जानेवाला त्योहार कौन -सा है?
७. संसार का सबसे बडा द्वीप कौन -सा है?
८. हमारे देश में सर्वप्रथम जो 'क्रिकेट टेस्ट' स्पर्धाएँ हुई, उनका केप्टन कौन था?
९. भूमि पर स्थित अति शीतल प्रदेश कौन -सा है?
१०. ओलिंपिक क्रीडाओं में हमारे देश की तरफ़ से भाग लेकर किसने सुवर्ण पदक जीता? कब?
११. 'एलक्ट्रिक मोटर' का आविष्कार किसने किया?
१२. वह देश कौन -सा है, जो 'उदय सूर्य भूमि' के नाम से प्रसिद्ध है?
१३. डच जब कालनी मात्र था, तब न्यूयार्क का क्या नाम था?
१४. चीन का सर्वप्रथम सम्राट कौन था?
१५. नोबुल शांति-पुरस्कार प्राप्त अमेरिका के नीग्रो नेता का क्या नाम है?
१६. एवरेस्ट शिखर का अधिरोहण करनेवाली प्रथम महिला का क्या नाम है और कब?

## उत्तर

१. जार, जारिना
२. 'क्विट इंडिया' आंदोलन का आरंभ
३. १८६९, लाल समुद्र, मध्यधरा समुद्र
४. थाने, बंबई, १८५३
५. जर्मनी, इटली, जापान
६. कुंभमेला
७. ग्रीनलाण्ड
८. सी. के. नायुडु
९. अंटारकिटका का वोस्टोक स्टेशन (२७-६, सेलियस)
१०. १९००, पारिस नगर में संपन्न क्रीडाओं में हमारे देश के प्रतिनिधि नार्मन पिटकार्ड ने भाग लिया।
११. मैखेल फयारडे
१२. जापान
१३. न्यू अम्सटरडाम
१४. कुब्लैखान, (चंगेजखान का पोता)
१५. मार्टिन लूथर किंग जूनियर
१६. जापान की जुंको टाबे (१९७५,मई, १६ को)

# ज्ञान-पांडित्य

रंगनाथपुर में पाँडुरंग नामक एक व्यापारी था। उसका व्यापार बहुत ही अच्छी तरह चल रहा था। उसके दोनों बेटे बड़े हो रहे थे, लेकिन दोनों में से किसी को व्यापार में दिलचस्पी नहीं थी। पाँडुरंग की चाह थी कि दोनों व्यापार करें या दोनों में से एक व्यापार करे। व्यापार तो उसके पुरखों से चला आता हुआ पेशा था। वह नहीं चाहता था कि विरासत में प्राप्त इस पेशे को छोड़ उसके लड़के किसी और पेशे में लग जाएँ। उसने अपने लड़कों को बहुत समझाया, पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी।

पाँडुरंग का बड़ा बेटा था श्रीनाथ। पढ़ाई में बहुत ही चुस्त। किसी भी क्लिष्ट ग्रंथ को एक बार पढ़ ले तो दूसरी बार पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती। उसे सब कुछ याद हो जाता था। उसकी इच्छा महान पंडित बनने की थी।

श्रीनाथ का भाई कमलाकर भी शिक्षित बनने के स्वप्न देखा करता था। शब्द-कोश की सहायता से काव्यों के विषयों को समझता था और यों अपने ज्ञान की प्यास बुझाता था। एक दिन पांडुरंग के घर बृहस्पति नामक एक गुरु पधारे। समीप ही के जंगल में वे एक गुरूकुल चला रहे थे। कभी-कभी देश में पर्यटन करके, योग्य शिष्यों को चुनते थे।

पांडुरंग ने अपने बेटों के बारे में उनसे कहा "मै तो चाहता हूँ कि मेरे बेटे विद्याओं में पारंगत हों। लेकिन मेरे व्यापार को संभालने के लिए वारिस भी तो चाहिये। आप उनसे मिलिये और उनमें से किसी को व्यापार करने के लिए मनाइये। मैं उनके बारे में बहुत ही चिंतित हूँ। दोनों अपनी-अपनी धुन में लगे हुए हैं। आप ही समझा सकते हैं और मेरी चिंता को दूर कर सकते हैं।"

वृहस्पति ने श्रीनाथ को बुलाया और पूछा "कौन-कौन से ग्रंथों का तुमने पठन किया

विनायक जोशी

स्मरण में रखने की शक्ति मुझमें नही है। जिन विषयों पर मुझे आसक्ति है, उन्ही विषयों को परिश्रम करके समझने की कोशिश करता हूँ''। कमलाकर ने कहा । बृहस्पति ने उससे और कोई बात नहीं की । पाँडुरंग से कहा''तुम्हारा बड़ा बेटा व्यापार करने योग्य है। दूसरा बेटा पंडित होगा। दोनों को अपने आश्रम में ले जाऊँगा और कुछ समय बाद वापस भेजूँगा ''।

पांडुरंग ने आश्चर्य से कहा'' किसी भी ग्रंथ को कंठस्थ कर सकता है मेरा बड़ा बेटा। उसे आप व्यापारी बनाने के लिए कह रहे हैं। अधूरे ज्ञानवाले मेरे दूसरे बेटे को पंडित बनाने का आप दावा कर रहे हैं। यह कैसे संभव है? लगता है कि आप वास्तविकता की गहराई में जा नहीं पाये''।

है?'' जानकारी पाकर वे चकित रह गये। उन ग्रंथों के हर विषय को वह सविस्तार बता पाया। फिर बृहस्पति ने कमलाकर को बुलाकर उससे कुछ प्रश्न पूछे। उसने भी ऐसे तो बहुत -से ग्रंथों का पठन किया, किन्तु कोई भी विषय संपूर्ण रूप से जानता नहीं था। हर ग्रंथ के कुछ भागों पर ही वह प्रकाश डाल पाया, जो विषय उसे पसंद थे।

''तुमने बहुत-से ग्रंथों का पठन अवश्य किया है, लेकिन किसी भी ग्रंथ का पूर्ण रूप से अध्ययन नहीं किया। इसलिए तुम्हारा ज्ञान अधूरा है''। बृहस्पति ने अपना विचार व्यक्त किया।

''आर्य, मैं यह जानता हूँ। पूरे ग्रंथ को

बृहस्पति मुस्कुराते हुए बोले'' सच्चाई कल तक तुम्हें मालूम हो जायेगी। इसके पहले मैं तुम्हारी एक सहायता करना चाहता हूँ। वैद्य - शास्त्र में मेरा प्रवेश है। तुम्हारे घर में अगर कोई किसी विचित्र रोग के शिकार हों तो बताना, दवा देकर जाऊँगा।''

पाँडुरंग ने घर के सब लोगों को एक जगह पर बिठाया और बृहस्पति की कही बातें बतायीं। सबने अपने- अपने रोगों के विवरण दिये। इनमें से पांडुरंग की माँ का रोग विचित्र रोग था। बिल्ली देखने पर उसे सर -दर्द होता था। बिल्ली के चले जाने के बाद उसका सर-दर्द दूर हो जाता था।

बृहस्पति को इस विचित्र रोग के बारे में मालूम हुआ। उसने तालपत्रों पर कुछ लिखा और उसे पांडुरंग को देते हुए कहा "इसमें तुम्हारी माँ के रोग की चिकित्सा के विवरण हैं। एकांत में तुम रात को अच्छी तरह से पढ़ो और कल जब तुम मुझसे मिलोगे तब इसकी विशेषता बताना। तब तक इसकी विशेषताओं की चर्चा किसी से मत करना।"

इसके बाद उन्होंने श्रीनाथ तथा कमलाकर को तालपत्रों के दो ग्रंथ दिये और कहा "वैद्य-शास्त्र संबंधी, जो दो ग्रंथ मेरे पास हैं। उन्हें मैं तुम दोनों को दे रहा हूँ। एक ही रात में संपूर्ण ग्रंथ के विषयों को समझने की कोशिश करो"।

दिन गुज़र गया। दूसरे दिन जब सब इकट्ठे हुए, तब पांडुरंग ने कहा "आर्य मुझे संस्कृत भाषा नहीं आती। तालपत्रों में संस्कृत के जो श्लोक है, उन्हें समझना मेरे वश के बाहर है"।

बृहस्पति ने हँसते हुए श्रीनाथ को देखा। उसने बड़े गर्व से कहा " आपके दिये ग्रंथ को कंठस्थ कर लिया है। कोई भी श्लोक पूछिये दुहरा दूँगा"।

बृहस्पति ने उसकी भली - भाँति परीक्षा ली और कहा "संपूर्ण ग्रंथ के श्लोकों को तुमने कंठस्थ कर लिया। एक ही दिन में इस असाध्य कार्य को साध्य कर पाये। तुम असाधारण बुद्धिशाली हो "। उसकी प्रशंसा करने के बाद उन्होंने कमलाकर की ओर देखा।
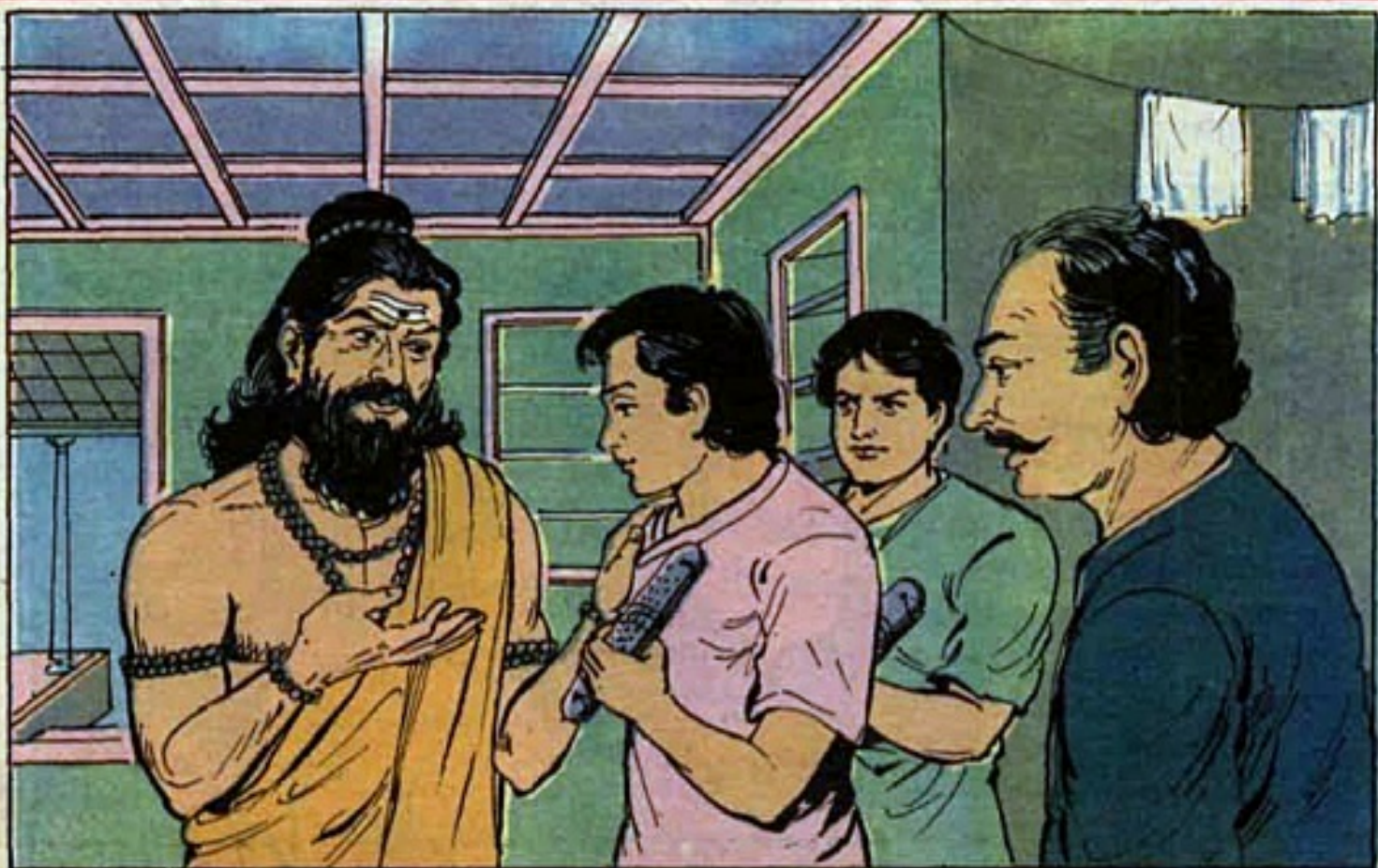
उसने सिर झुकाकर सविनय कहा "यह ग्रंथ बहुत ही क्लिष्ट है। इसलिए इसे पचाना मुझसे नहीं हो पाया। लेकिन इसमें मे एक जगह पर हमारी नानी के रोग के संबंध में विवरण हैं।उस भाग को मैं शब्द- कोश की सहायता से समझ पाया हूँ। उसके रोग का निवारण घर के पिछवाड़े में लगे पौधों से दूर किया जा सकता है।"

बृहस्पति ने सिर हिलाते हुए कहा "श्रीनाथ की स्मरण-शक्ति अदभुत है। स्मरण- शक्ति व्यापारी के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसीलिए मैं श्रीनाथ को थोड़े दिनों तक अपने पास रखकर व्यापार का प्रशिक्षण देना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि कमलाकर बड़ा पंडित बनेगा। उसे उत्तम शिक्षित बनाने की जिम्मदारी मेरी है"।

श्रीनाथ चिल्लाता रहा कि यह निर्णय अन्यायपूर्ण है। वह कहता रहा कि मैं पंडित बनना चाहता हूँ। तब बृहस्पति ने गंभीरता से कहा "अब तक तुम्हारे पिता को मालूम हो गया होगा कि मेरा निर्णय सही है। पांडुरंग, अपना अभिप्राय बताओ "।

पांडुरंग थोडी देर सोच-विचार के बाद बोला "श्रीनाथ पुस्तक की तरह है। पुस्तक के समस्त विषयों को अपनी स्मरण-शक्ति के आधार पर मस्तिष्क में संग्रह कर सकता है। किन्तु क्या प्रयोजन? उसने जिस ग्रंथ को कंठस्थ किया, उसमें नानी की चिकित्सा के विवरण उपलब्ध हैं, जो वह जान नहीं पाया। जो भाषा से अनभिज्ञ है, पुस्तक से उसका कोई उपयोग नहीं होता। स्वयं मैं इसका प्रमाण हूँ। चिकित्सा का क्या उपाय है, यह मैं जान नहीं पाया, क्योंकि वह संस्कृत भाषा में है। पांडित्य के अभाव में ज्ञान की व्यर्थता का प्रमाण है श्रीनाथ। आवश्यक विषय के अर्थ को समझने की शक्ति कमलाकर में है। इसलिए इसमें पंडित बनने की क्षमता है। इस सच्चाई को जतानेवाले बृहस्पति गुरु के हम सब आभारी हैं।"

इसके बाद पांडुरंग की माँ की चिकित्सा हुई। बृहस्पति से शिक्षा पाकर श्रीनाथ बड़ा व्यापारी बना तो कमलाकर बड़ा पंडित। दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र में नाम कमाया।

# मछली-चोर

मछुवारों की एक बस्ती में बबलू और कांता नामक पति- पत्नी रहते थे। कांता ही अपनी सूझ-बूझ से परिवार चलाती थी। बबलू और मछुवारों के साथ डोंगी में समुद्र में मछली पकड़ने जाया करता था। मछुवारे मछलियों को आपस में समान रूप से बाँट लेते थे। उन मछलियों को बेचने पर जो छोटी - मोटी रकम हाथ आती थी, उससे कांता अपना घर चलाती थी। बबलू सीधा-सादा था। उसे कोई काम करना आता ही नहीं था। किसी और के काम में वह दखल भी नहीं देता था। पत्नी जो करने को कहती, करता था। घर-बार का खर्चा क्या होता है, पत्नी कांता घर कैसे संभाल रही है, आमदनी काफी पड़ती है या नहीं आदि साधारण बातों से भी वह बिल्कुल ही अपरिचित था। इसलिए कांता को कभी-कभी परेशानी होती थी।

बबलू को एक दिन तली मछलियाँ खाने की इच्छा हुई। इसलिए उसने उस दिन उसके हिस्से में आयी मछलियों को बेचने से इनकार किया और ज़िद की कि उनसे तली मछलियों की तरकारी बनायी जाए।

कांता ने उसे बहुत समझाया, पर उसने उसकी एक ना सुनी। तब कांता ने बबलू से कहा "तो ये मछलियाँ ले जा और उन्हे इतनी अच्छी तरह धो देना, जिससे इनकी बू निकल जाए "।

बबलू बहुत ही खुश होता हुआ उन्हें धोने तालाब के पास ले जा रहा था।

रास्ते में रामू उससे मिला और पूछा " कहाँ जा रहे हो?"

"अपनी बीबी के कहे मुताबिक़ मछलियाँ तालाब में धोने ले जा रहा हूँ, जिससे इसकी बू निकल जाए। आज इनकी तरकारी बनाएँगे और खायेंगें" बबलू ने आनंद से कहा।

" क्या धो देने से मछलियों की बू दूर हो

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

जायेगी। उन्हें तो सुखाना चाहिए। देखो, मेरे पास चार सूखी मछलियाँ हैं। अपनी कच्ची मछलियाँ मुझे दे दो और मेरी सूखी मछलियाँ तुम ले जाओ। फिर इनकी तरकारी बना लेना"। रामू ने कहा।

अपनी टोकरी में से चार सूखी मछलियाँ उसने बबलू को दीं। उससे चार मछलियाँ लीं और जल्दी-जल्दी वहाँ से खिसक गया।

बात असल में यों थी। उसी दिन बन्दरगाह पर एक जहाज़ आया हुआ था। रामू ने वहीं से मछलियों की चोरी की थी। उन सूखी मछलियों का उसके पास होना खतरे से खाली नही। हो सकता है, चोरी के अपराध में वह पकड़ा भी जाए। इस हालत में उसकी मुलाक़ात बुद्धू बबलू से हुई। वह इस मौक़े की ताक़ में ही था कि किसे इसे बेच दूँ ? उसने अक़्लमंदी से इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और उन सूखी मछलियों को बबलू के सर मढ़ दिया।

बबलू उन सूखी मछलियों को घर ले गया और कहा " इन्हें तलो।"

" उन मछलियों का क्या हुआ , जो तुम धोने ले गये थे?" कांता ने पूछा। बबलू ने पूरी बात बतायी और कहा "रामू कहता है कि सूखी मछलियों की तरकारी ही स्वादिष्ट होती है। मैंने अपनी चार कच्ची मछलियाँ उसे दीं और उसकी चार सूखी मछलियाँ ले लीं। मुझे भी उसकी बात सही लगी।"

कांता अपने पति के बुद्धूपन को भली-भाँति जानती थी, इसलिए एक मछली निकाल ली और बाक़ी तीनों को बाज़ार में बेच आने को कहा। बबलू उन्हें लेकर बाज़ार गया। जब कांता उस मछली के पेट को चीरने लगी तो उस उसमें चमकता हुआ एक हीरा दिखायी पड़ा।

जहाज़ के व्यापारी को चोरों का डर था , इसलिए उसने हीरों को मछलियों में छिपा रखा था। बंदरगाह पहुँचने पर व्यापारी ने मछलियों की गिनती की , तब उसने चार मछलियाँ कम पायी। उसने तुरंत राजा से शिकायत की कि उसकी चार मछलियों की चोरी हो गयी है, जिनमें उसने चार हीरे छिपा रखे थे।

राजा ने फ़ौरन अपने सैनिकों को हुक़्म दिया कि उस आदमी को पकड़ लाओ,

जिसके पास सूखी मछलियाँ हों। रास्ते में उन्हें बबलू मिला। सैनिक उसे राजा के पास ले गये। व्यापारी ने उन सूखी मछलियों को पहचान लिया और कहा "ये मेरी ही मछलियाँ है। इनके पेट को चीरने से बात साफ़ हो जायेगी। इनमे हीरे मिलेंगे। उसने कहा कि एक और मछली भी होनी चाहिये।"

राजा ने बबलू से पूछा "क्या तुम्हीं ने इस व्यापारी के जहाज़ से इन मछलियों की चोरी की थी ?"

"जहाज़ - वहाज़ के बारे में मैं कुछ नहीं जानता। रामू ने मुझसे चार कच्ची मछलियाँ लीं और अपनी चार सूखी मछलियाँ दीं। एक मछली मैंने अपनी पत्नी को तलने के लिए दी और मेरी पत्नी के कहने पर इन्हें बेचने बाज़ार आ रहा था। तब सिपाहियों ने मुझे पकड़ लिया।" बबलू ने सच बताया।

राजा के भेजे हुए सैनिक कांता से वह हीरा भी ले आये, जो उसे मछली के पेट में मिला था। राजा ने रामू को बंदी बनाकर लाने की आज्ञा दी। सैनिक रामू को पकड़कर ले आये।

राजा ने रामू से पूछा "इन सूखी मछलियों को इस बबलू को देनेवाले तुम्हीं हो?।"

घबराता हुआ रामू बोला "मै तो कुछ भी नही जानता।" "इनमें हीरे पाये गये हैं। बबलू से मालूम हुआ कि इन्हें तुम्हीं ने उसे दिया था। तुम तो इस बात से इनकार कर रहे हो कि ये मछलियाँ तुमने उसे दीं। तो मतलब यह हुआ कि ये हीरे तुम्हारे नहीं हैं। हैं ना? अच्छा बबलू , ये तुम्हारे ही हीरे हैं। इन्हें ले जाओ" राजा ने कहा।

रामू फ़ौरन बोला "महाराज, मैंने ही ये सूखी मछलियाँ बबलू को दी थी। उनमें जो हीरे हैं, उनपर मेरा ही हक़ बनता है"।

अब साबित हो गया रामू चोर है। राजा ने रामू को कड़ी सजा दी और हीरों के व्यापारी को हीरे लौटाये।

बबलू की ईमानदारी की तारीफ करते हुए उसे कुछ रुपये दिये। बबलू खुश होता हुआ घर लौटा।

PolioPlus

# IMMUNIZATION AN ASSURANCE OF GOOD HEALTH TO CHILDREN

## VACCINATIONS When and How Many

| Age to Start Vaccination | Name of Vaccine | Name of Disease | How Many Times |
|---|---|---|---|
| Birth | BCG | Tuberculosis | Once |
| 6 weeks | Polio | Polio | Three times with intervals of at least one month |
| 6 weeks | DPT | Diphtheria Pertussis (Whooping Cough) Tetanus | Three times with intervals of at least one month |
| 9 months | Measles | Measles | Once |

**Babies should receive all vaccinations by the time they are twelve months old.**

Pregnant women should get themselves vaccinated against Tetanus (TT) twice—in an interval of at least one month—during the later stages of pregnancy.

**HEALTHY CHILD—NATION'S HOPE & PRIDE**

Design courtesy : World Health Organisation
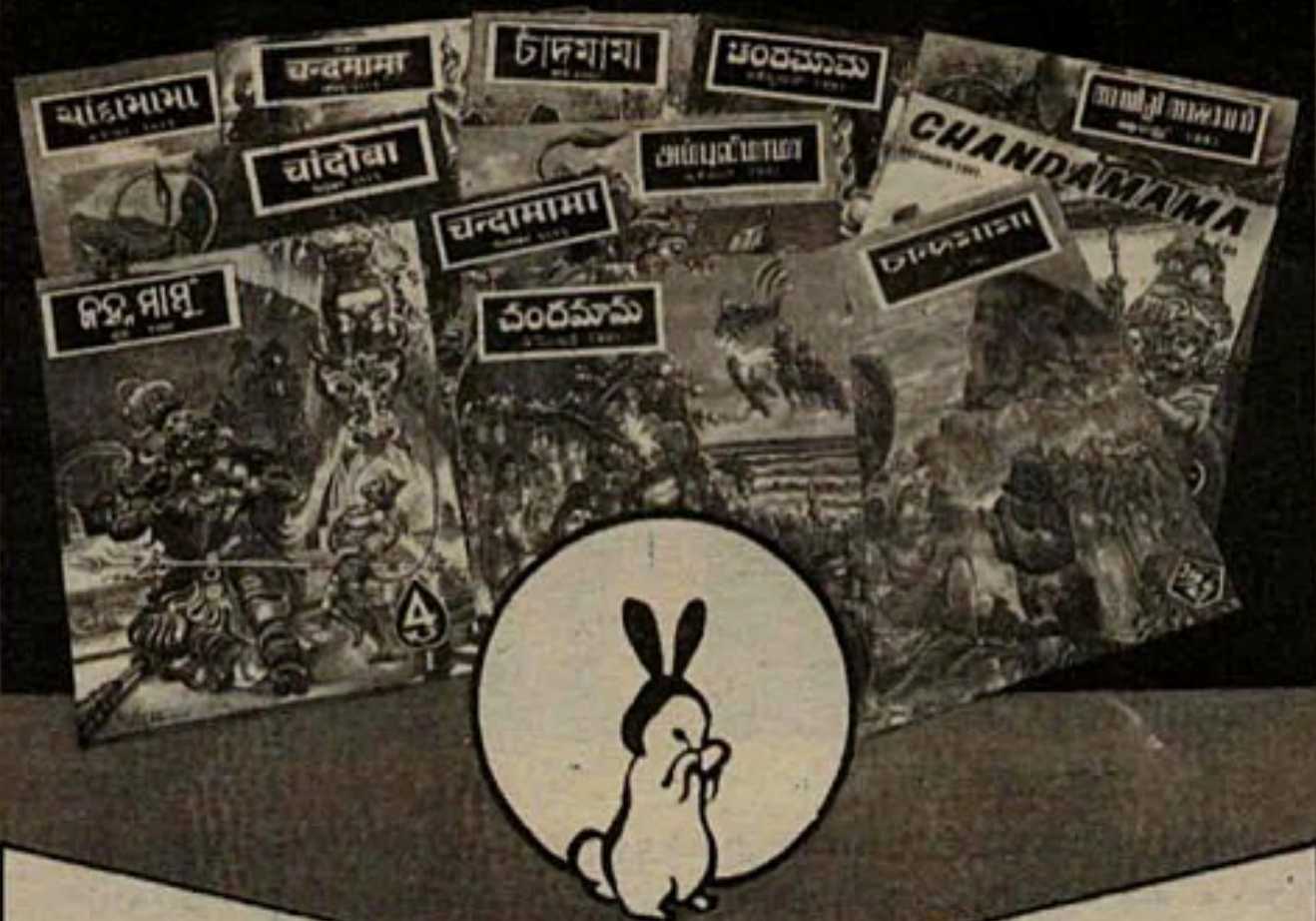
चन्दामामा
चांदोबा
CHANDAMAMA
చందమామ

# फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, जून, १९९५ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

Shanbagavalli

Sundaramurthy

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० अप्रैल, '९५ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

**चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

---

## फ़रवरी, १९९५, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **खूब नाच के दिखाऊँगी मैं**

दूसरा फोटो : **शिव-शक्ति को मनाऊँगी मैं**

प्रेषक : **परमजीत सिंग,**

**B/5/72, नये बस स्टांड के पास, गर शंकर रोड, तेह नवान शहर, जलंदर जिला, पंजाब**


# चन्दामामा

**भारत में वार्षिक चन्दा : रु ६०/-**

चन्दा भेजने का पता :

**डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६**

**Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.**